चन्दामामा
अगस्त १९७२
९० P

Photo by : SURAJ N. SHARMA

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.
सिर्फ़ २५ पैसे
PARLE POPPINS FRUITY SWEETS
नयी पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।
पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो
everest/122b/PP hin

प्रत्येक पुस्तकालय में रखने योग्य!

★

'SONS OF PANDU'
Rs. 5-25

'THE NECTAR OF THE GODS'
Rs. 4-00

अंग्रेज़ी में रचित: लेखिका
श्रीमती मधुरम भूर्तलिगम

भेंट देने व संग्रह करने योग्य
बालकोपयोगी पुस्तकें!

★

आज ही आदेश दें:

डाल्टन एजेन्सीस

'चन्दामामा बिल्डिंग्स'

मद्रास - २६

स्वान पेन
अंतरिक्ष युग के छात्रों के लिए

स्वान पेन आधुनिक पीढ़ी का मनपसंद पेन। एकमात्र स्वान ही पेन है जो इतना सहजता से लिखता है, स्वान ऑक्सफोर्ड या केम्ब्रिज पेन इस्तेमाल कीजिए और सफलताओं के चांद-सितारे तोड़ लीजिए।

बढ़िया
लिखाई के लिए
स्वान
डिलक्स स्याही
इस्तेमाल कीजिए
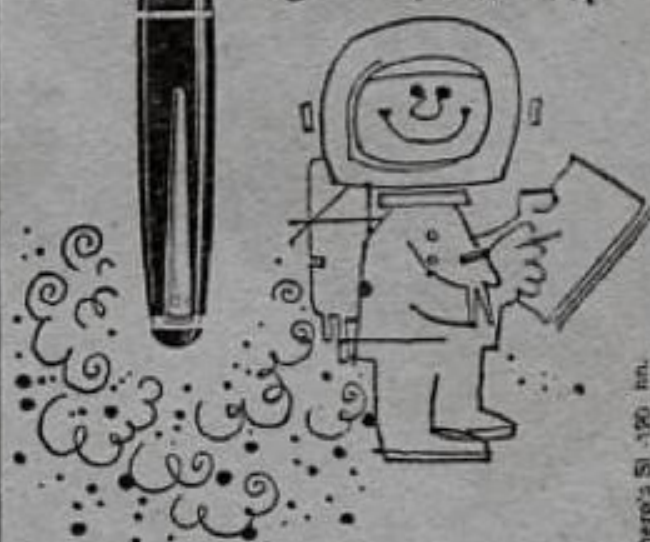
स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
अडवानी चेम्बर्स, फि. मेहता रोड, बम्बई-१
शाखा: ३४ बी, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-१
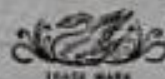
TRADE MARK

वह टॉनिक जो केवल
भूख बढ़ाती है अधूरा काम करती है
इन्क्रिमिन लीजिए...
इस से बच्चे अधिक खाते हैं, अधिक बढ़ते हैं
इन्क्रिमिन-टोली में आकर...
बढ़ना सीखो भूख जगा कर!
इन्क्रिमिन* टॉनिक
Incremin drops
सभी कैमिस्टों के यहां प्राप्य
Lederle
* अमेरिकन सायानामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क
लिंटास-INC. 20-537 HI

चन्दामामा

संस्थापक: नागिरेड्डी

संचालक: 'चक्रपाणी'

अकाल आदि प्राकृतिक प्रकोप के कारण निम्न वर्ग के लोगों का कष्ट झेलना तथा अपराध करने के लिए उद्यत हो जाना अकसर होता रहता है। लेकिन इस मास की बेताल कथा के द्वारा हमें यह विदित होता है कि किसी प्रकार का अपराध किये बिना ही कुछ लोग तक़लीफ़ों में फंस जाते हैं। ऐसे भी लोग जब-तब पाये जाते हैं। 'चार यात्री' तथा 'कुशल-प्रश्न' के द्वारा हमें होशियारी तथा सूझ-बूझ का परिचय मिलता है।

वर्ष : २५ अगस्त १९७२ अंक : २

अमर वाणी

अहो प्रकृति सादृश्यम्
श्लेष्मणो दुर्जनस्य च,
मधुरैः कोप मायाति,
कटुकै रूप श्याम्यति । ॥ १ ॥

[दुर्जन तथा श्लेष्म के स्वभाव में समानता है। जैसे श्लेष्म मिठास से बढ़ता है और कड़ुएपन से घटता है, वैसे ही दुष्ट व्यक्ति मीठी बातों पर नाराज हो जाता है और तीखी बातों से चुप हो जाता है।]

दातृत्वम्, प्रियवक्तृत्वम्
धीरत्व मुचितज्ञता,
अभ्यासेन न लभ्यंते,
चत्वारस्सहजा गुणाः । ॥ २ ॥

[दानशीलता, प्रियभाषण, धैर्य और औचित्य ये गुण मनुष्य को स्वभावतः प्राप्त होने चाहिये, लेकिन अभ्यास के द्वारा प्राप्त होनेवाले नहीं हैं ।]

अभुक्त्वामलकम पथ्यम्
भुक्त्वा तु बदरीफलम्
कपित्थम् सर्वदा पथ्यम्
कदली न कदाचन् ॥ ३ ॥

[खाली पेट में आमलक, भोजन के बाद बदरी फल तथा किसी भी समय कैथे का खाना उत्तम है, पर केला किसी भी समय ठीक नहीं होता ।]

सहज गुण

चार यात्री

विमलावती शादी के बाद अपने ससुराल में आयी तो देखती क्या है, उसका पति एक दम क्रोधी है। उसने अपनी पत्नी के लिए कई कड़े नियम बनाये और सावधान किया-"तुम कभी किसी से भूल से ही मत बोलो और मौन रहकर अपने काम-काज किया करो।"

विमलावती बड़ी चालाक और अक्लमंद भी थी। उसके पति ने जो कड़े नियम बनाये, वे उसे बहुत ही बुरे लगे। अलावा इसके जब वह अपने मायके रहती थी, तब वहाँ अनेक मेहमान आते थे, उनकी बातें वह सुना करती। पर ससुराल में किसी का आना-जाना नहीं होता था। गाँववाले उसके पति के स्वभाव से परिचित थे, इसलिए कोई उससे बात नहीं करता था।

एक दिन विमलावती गाँव के बाहर कुएँ से पानी भर रही थी, तभी उधर से चार यात्री आ पहुँचे। उन्हें बड़ी प्यास लगी थी। इसलिए वे थोड़ी दूर पर ही खड़े हो गये और उनमें से सब से बड़े व्यक्ति को उन लोगों ने कुएँ के पास भेजा। उस यात्री ने विमलावती के निकट जाकर पूछा-"बहन! बड़ी प्यास लगी है, क्या पीने को पानी दे सकती हो?"

"आप कौन हैं?" विमलावती ने पूछा।

"मैं एक यात्री हूँ।" आगंतुक ने जवाब दिया।

"इस सृष्टि में सिर्फ़ दो ही यात्री हैं, तीसरा यात्री तो कोई नहीं है।" ये शब्द कहकर विमलावती अपने काम में निमग्न हो गयी।

पहले व्यक्ति को पानी पिये बिना कुएँ के पास खड़े देख दूसरा यात्री भी कुएँ के पास आ पहुँचा। विमलावती ने दूसरे यात्री से

रामनिवास मिश्र

कहा–"ये अपने को यात्री बताकर झूठ बोल रहे हैं। आप भी तो कोई दूसरे यात्री नहीं हैं न?"

उस यात्री ने सोचा कि यदि वह अपने को यात्री बता दे तो यह औरत पीने को पानी न देगी, तब वह बोला–"मैं एक गरीब आदमी हूँ।"

"इस दुनिया में सिर्फ़ दो प्रकार के गरीब हैं, आपका कहना सच नहीं है।" ये शब्द कहकर विमलावती फिर अपने काम में लीन हो गयी।

थोड़ी देर बाद तीसरा यात्री कुएँ के पास आया। विमलावती ने उससे पूछा–"ये दोनों अपने को यात्री और गरीब बताकर झूठ बोल रहे हैं, आप कौन हैं?"

"मैं एक मूर्ख हूँ।" तीसरे ने कहा।

"आप भी झूठ बोलते हैं। इस दुनिया में दो ही मूर्ख हैं।" इन शब्दों के साथ विमलावती फिर अपने काम में डूब गयी।

आखिर चौथा यात्री कुएँ के पास आया। "आप कौन हैं, भाई? ये तीनों अपने को यात्री, गरीब और मूर्ख बताकर झूठ बोल रहे हैं। क्या आप ही सही, सच बोल सकते हैं?" विमला ने पूछा।

"मैं बलवान हूँ।" चौथे ने कहा।

"इस दुनिया में दो ही बलवान हैं। आपने भी झूठ कह दिया।" इन शब्दों के साथ विमलावती ने अपने कपड़े निचोड़ने का काम पूरा किया।

इसके बाद वह पानी का घड़ा लिये घर लौटते बोली–"बेचारे, आप सब बड़े ही प्यासे मालूम होते हैं। आप अपनी प्यास बुझाकर मेरे घर चलिये, भोजन करके तब अपने रास्ते जाइये।" इन शब्दों के साथ विमलावती ने उन्हें पानी पिलाया और उन्हें अपने साथ घर लिवा लायी।

अपनी पत्नी के पीछे चार लोगों को आते देख विमलावती का पति क्रोध से भर उठा, एक लाठी लिये बाहर आया

और बोला–"अरी ये लोग कौन हैं? ये क्यों तुम्हारे पीछे पड़े हैं?"

"उन्हीं से पूछिये।" यह कहकर विमलावती घर के भीतर चली गयी।

"महाशय, हम चारों यात्री हैं। हमें प्यास लगी थी, इसलिए हमने आपकी पत्नी से पानी माँगा। उसने हमें खाने के लिए बुलाया, इसलिए हम आपके घर चले आये। आपको इस तरह लाठी लेकर हम पर टूट पड़ना ठीक नहीं है।" यात्रियों ने समझाया।

"अरे, तुम लोग औरत से पानी माँगते हो? ऐसी हिम्मत?" इन शब्दों के साथ विमलावती के पति ने यात्रियों पर लाठी उठायी। इस पर अपने को बलवान कहने वाले यात्री ने विमलावती के पति के हाथ से लाठी छीन ली। अब दोनों के बीच मुक्के बाजी होने लगी।

झगड़े का पता जब राजभटों को लगा तब वे दौड़े आये और उन सबको कोत्वाल के सामने ले जाकर शिकायत की–"सरकार, ये लोग बीच सड़क पर लड़ रहे हैं।"

कोतवाल ने सब को दस-दस कोड़े लगाने की सजा दी। विमलावती तभी वहाँ पर आयी और बोली–"कोत्वाल साहब, आपका फ़ैसला गलत है। आप इसे नहीं मानेंगे तो मैं राजा के पास जाकर आप पर शिकायत करूँगी।"

"जाओ, शिकायत करो।" कोत्वाल ने धमकी दी।

"तब तो राजा का फ़ैसला करने तक सजा स्थगित कीजिये।" ये शब्द कहकर विमलावती सीधे राज दरबार में पहुँची और बोली–"महाराज, कोत्वाल साहब ने अकारण ही मेरे पति तथा चार यात्रियों को सजा सुनायी है। आप कोत्वाल से कैफ़ियत तलब कीजिये।"

राजा ने कोत्वाल को तथा बाक़ी पाँचों लोगों को बुलवाकर सज़ा के बारे में दरियाफ़्त की।

"महाराज, ये लोग बीच सड़क पर झगड़ रहे थे।" कोत्वाल ने कहा।

"ये सब कौन हैं? क्यों इन लोगों ने झगड़ा किया?" राजा ने विमलावती से पूछा।

"महाराज, अगर कोत्वाल साहब ने यह बात पूछी होती तो क्या मैं आपके पास आकर शिकायत करती?" विमलावती ने उत्तर दिया। तब उसने सारी कहानी सुना कर कहा–"महाराज, इसमें दोष तो मेरा है। मुझे दण्ड देने के लिए मेरे पति हैं ही।"

"तुम्हारा कहना तो ठीक है। लेकिन तुमने इन लोगों से कहा है कि इस दुनिया में दो ही यात्री, दो ही गरीब, दो ही मूर्ख और दो ही बलवान हैं, वे कौन हैं?" राजा ने विमलावती से पूछा।

इस पर विमलावती ने उत्तर दिया– "इस सृष्टि में सूर्य और चन्द्र ही सच्चे यात्री हैं। गाय और कन्या ये दोनों ही सचमुच गरीब हैं। वरुण और वायु–ये दोनों बलवान हैं।"

"तुमने तो दो मूर्खों के नाम नहीं लिये?" राजा ने पूछा।

"असली बात जाने बिना फ़ैसला करने वाला तथा घर आये हुए लोगों पर लाठी उठानेवाला मेरी दृष्टि में सच्चे मूर्ख हैं, महाराज!" विमलावती ने कहा।

राजा विमलावती की अक्लमंदी पर खुश हुआ, तब कोत्वाल को डाँट बतायी तथा अपनी पत्नी पर कड़े नियम लगाने वाले विमलावती के पति को समझाया और सब को भेज दिया।

परमानंदगुरु का घोड़ा

परमानंदगुरु और उनके शिष्य हास्य और मूर्खता के लिए प्रसिद्ध थे। एक दिन गुरु अपने शिष्यों के साथ मठ में बैठा हुआ था, तभी एक शिष्य के मन में कोई बढ़िया विचार आया। उसने अपने साथियों से कहा—"हमारे गुरु तो महान व्यक्ति हैं। ऐसी कोई विद्या नहीं, जो हमारे गुरु न जानते हों! वे वृद्ध होते जा रहे हैं। पैदल चल नहीं पाते। इसलिए हमें किसी न किसी प्रकार एक घोड़ा खरीदकर उन्हें देना है। गुरुजी का पैदल चलना हमारे लिए अपमान की बात है!"

सभी शिष्यों ने एक दूसरे के चेहरे को देखा, आखिर सब ने इस सलाह को मान लिया। गुरु परमानंद ने भी अपनी सम्मति देते हुए कहा—"ऐसा ही करो, भाइयो! तुम लोगों जैसे शिष्यों के होते मेरे लिए किस बात की कमी है?"

दो शिष्यों को यह काम सौंपा गया कि वे लंबे-चौड़े घोड़े को देख खरीद लावे और उसका रंग भी बढ़िया हो।

दोनों शिष्य घोड़ा खरीदने चल पड़े। बड़ी दूर की यात्रा के बाद एक जगह एक तालाब दिखाई दिया। तालाब के किनारे हरे-भरे खेत थे। एक खेत में घास चरते पाँच-छे घोड़े उन्हें दिखाई दिये। उसी खेत में कूष्मांड के पौधे थे और उनमें बड़े बड़े कूष्मांड लगे थे।

"भाई, घोड़ा खरीदना हो तो ज्यादे पैसे खर्च हो जायेंगे, यहाँ पर तो घोड़े के अण्डे काफी पड़े हुए हैं। एक बढ़िया अण्डे को खरीद ले जाकर उसे सेंककर बच्चा पैदा करे तो कम खर्च में गुरुजी के लिए घोड़ा मिल सकता है।" दोनों शिष्यों ने परस्पर विचार किया। इस विचार के आते ही दोनों शिष्य लौटकर गुरु के पास पहुँचे और बोले—

"गुरुदेव, एक जगह हमें घोड़े के अण्डे दिखाई दिये हैं। एक अण्डे को सेंक कर बच्चा पैदा करें तो हमें सस्ते में घोड़ा मिल सकता है। आपकी क्या आज्ञा है?"

"वाह! वाह! तुम लोगों का विचार बहुत ही प्रशंसनीय है! लेकिन घोड़े के अण्ड़े को सेंके कैसे?" गुरु ने पूछा।

शिष्यों ने विचार-विमर्श करके यह निर्णय किया कि अण्डे से बच्चे के निकलने तक रोज़ एक एक शिष्य अण्डे पर बैठे सेंकते जाय! इसके बाद वे दोनों शिष्य धन लिये कूष्मांड़ वाले खेत में पहुँचे और किसान से पूछा–"महाशय, घोड़े के इस अण्डे का क्या दाम है?"

किसान ने समझ लिया कि ये दोनों मूर्ख हैं और मज़ाक में बोला–"घोड़े के इस अण्डे का दाम बीस रुपये हैं।"

"बस! बीस ही रुपये!" ये शब्द कहते शिष्यों ने किसान को बीस रुपये देकर कूष्मांड को अपने सर पर रख लिया। चलते चलते एक जगह वह एक पत्थर से ठोकर खाकर नीचे गिर पड़ा। कूष्मांड भी नीचे गिरा जिस से वह फूट गया। उसी समय पास की झाड़ी में बैठा खरगोश यह आवाज़ सुनकर डर गया और झाड़ी से निकलकर भागने लगा।

"अरे रे! अण्डा फूट गया तो बच्चा बाहर निकल आया। देखते हो, अण्डे से निकलते ही घोड़े का बच्चा कैसी तेजी से दौड़ रहा है। अगर यह बड़ा होगा तो बादलों में चलेगा, ज़मीन पर थोड़े ही चलेगा?" यह सोचते परमानंदगुरु के दो नों शिष्य खरगोश को पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़े। मगर वह भागकर गायब हो गया।

शिष्य तो थक गये। एक जगह दोनों ने आराम किया, फिर धीरे से मठ में पहुँचकर सारी बातें गुरु को सुनायीं।

"अच्छा, जाने दो! हम क्या कर सकते हैं! मेरी क़िस्मत में घोड़ा नहीं लिखा है।" इन शब्दों के साथ गुरु ने अपने शिष्यों को सांत्वना दी।
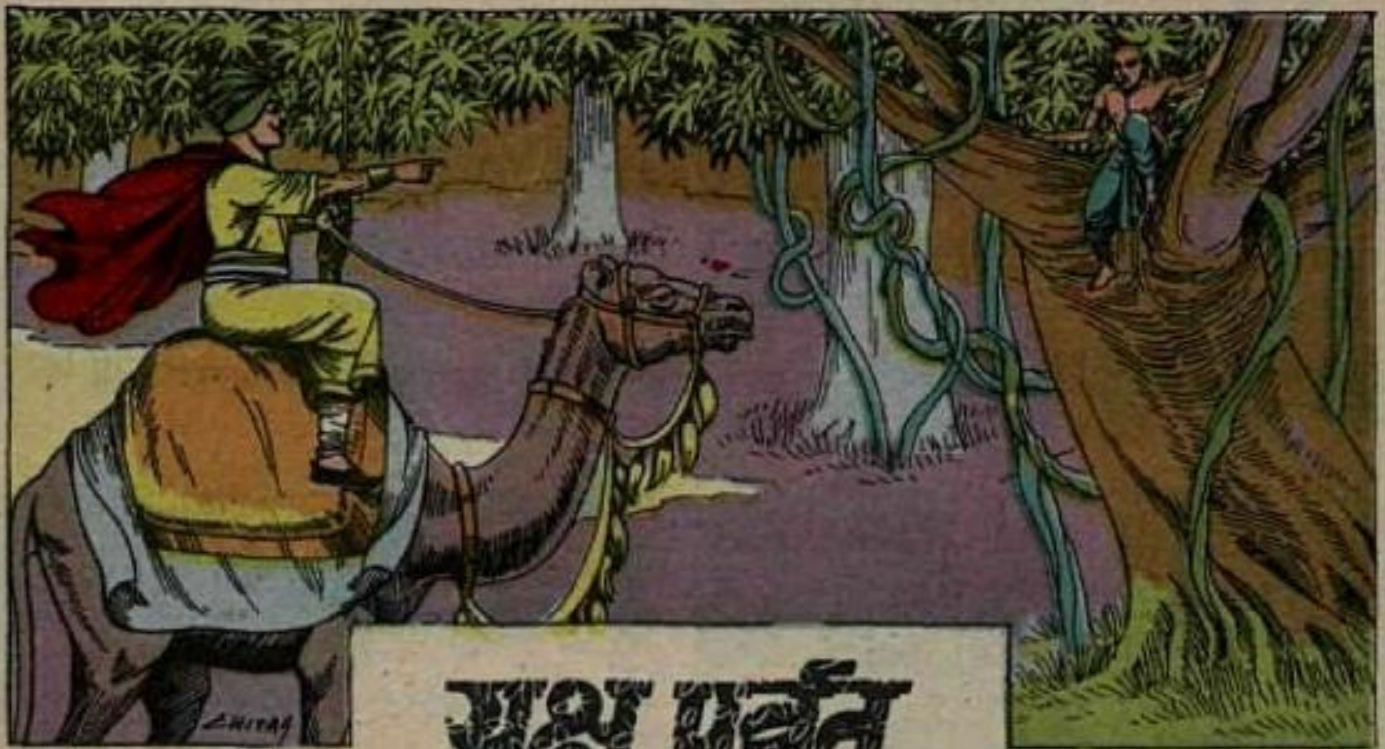
यक्ष पर्वत

[२]

[यह खबर मिली कि गैण्डे की जाति के लोगों के खेतों को लुटेरे लूटते जा रहे हैं, तब गैण्डे की जाति के लोग अपने मंत्री के नेतृत्व में लुटेरों का सामना करने गये। उस वक्त पेड़ की डालों में बैठे एक व्यक्ति ने उन्हें हिम्मत बांधनी चाही, तभी लुटेरों के नेता ने भाला उठाकर उसे नीचे उतर आने की चेतावनी दी। बाद—]

लुटेरों के नेता की मुखमुद्रा तथा उसे भाले को बढ़ाते देख स्वर्णाचारी ने सोचा कि उसकी मौत निश्चित है। गैण्डे की जाति के लोग अपनी जान हथेली में लिये अरण्यपुर की ओर भागते जा रहे हैं, ऐसी हालत में स्वर्णाचारी सोचने लगा कि अब उसका बचना संभव नहीं है। उसका पेड़ से उतरने में ख़तरा है और न उतरने पर भी खतरा है!

"अबे, अभी अभी तुमने अपनी अक़्लमंदी का परिचय दिया, अब क्यों बुद्धू की भांति सर हिलाते मेरी ओर ताक रहे हो! पेड़ की डालों पर से उतर आओगे या तुम पर भाला फेंक दूं।" लुटेरों के नेता ने दांत मींचते हुए कहा।

यह चेतावनी पाकर स्वर्णाचारी डर के मारे कांप उठा, पेड़ पर से उतरते हुए बोला—"साहब, नाहक़ मुझे मार डाल
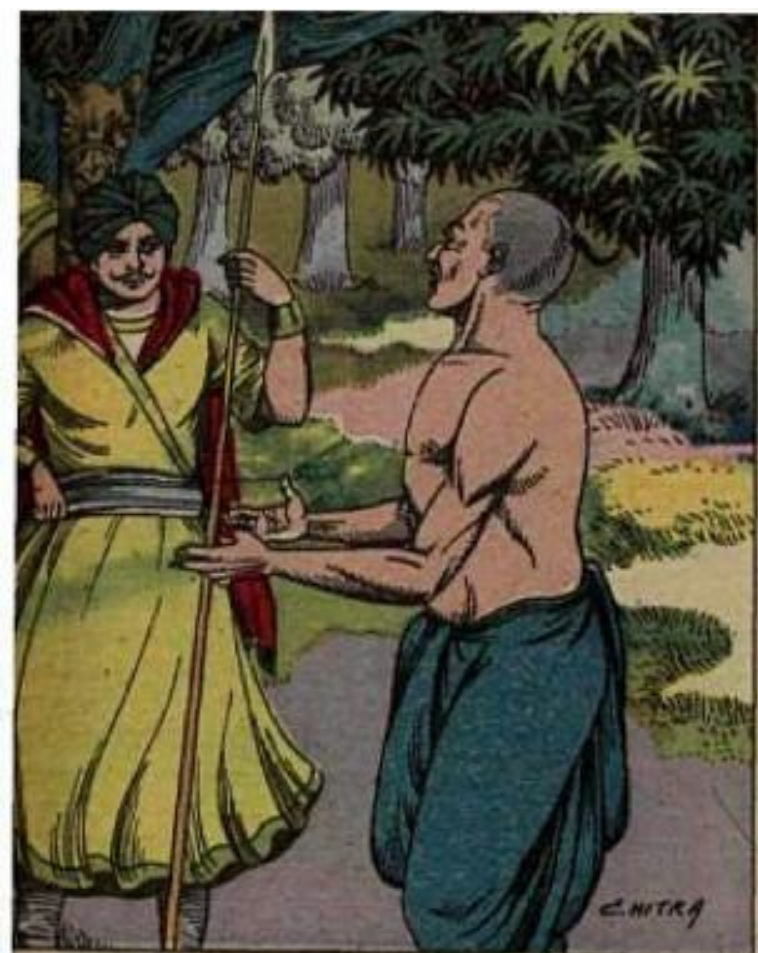
करके अपने सर पाप मत मोल लो। मैंने पहले ही बताया कि मैं एक वास्तुशास्त्री हूं। राजमहल से लेकर झोंपड़ी तक की इमारतों का मैं किसी प्रकार के वास्तुशास्त्र संबंधी दोष के विना निर्माण करा सकता हूं।"

इस पर लुटेरों का नेता जोर से हँस पड़ा और बोला–"तुम जो बात करते हो, इसका कोई मतलब नहीं है। क्या तुम यह समझते हो कि मैं कोई महल बनवाने के ख्याल से तुम्हारी खोज करते यहाँ तक आ गया हूँ, और मुझे कोई मकान बनानेवाला ही नहीं मिला! अरे कमबख्त, तुम पहले पेड़ से उतर जाओ।"

स्वर्णाचारी चुपचाप पेड़ से उतर पड़ा और खड़ा हो गया। लुटेरों का नेता ऊँट पर बैठे ही एक बार उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देख बोला–"तुम तो देखने में गैण्डे की जाति के नहीं लगते हो! लेकिन तुम यहाँ के जंगल और पहाड़ों में क्या करते हो?"

"साहब, आपकी अक़्ल की मैं तारीफ़ करता हूँ। आपने मुझे सही ही पहचाना कि मैं गैण्डे की जाति का नहीं हूँ। मैं पद्मपुर का निवासी हूँ। गृह-निर्माण करना मेरा पेशा है, मैं यंत्र-तंत्र के निर्माण के रहस्य भी जानता हूँ। जब गृह-निर्माण के द्वारा अच्छी आमदनी न हुई तब मैंने अपने यंत्र-निर्माण विद्या का प्रयोग करके विघ्नेश्वर पुजारी के लिए एक कृत्रिम हाथी का निर्माण किया, लेकिन दो क्षत्रिय युवकों ने मेरे रहस्य को जान लिया, आखिर अपने नगर को छोड़ इस जंगल में आ गया हूँ।" स्वर्णाचारी ने कहा।

"अबे, तुम यह सोचते हो कि तुम एक महा पुरुष हो, इसलिए मैं तुम्हारा जन्मवृत्तांत जानने की इच्छा रखता हूँ। तुम अपनी सारी कहानी मुझे क्यों सुनाते हो? मैंने तुमसे सिर्फ़ यही पूछा कि तुम इस प्रदेश में क्या करते हो? लेकिन तुमने किसी नगर की बात कही, क्या उस नगर

के लोग यहाँ पर हैं?" इस बार ऊँट से उतर कर लुटेरों के नेता ने भाला स्वर्णाचारी की छाती पर टिकाकर ये शब्द कहे।

स्वर्णाचारी डर के मारे कांपते हुए बोला–"साहब, मुझे मत मारो, मैं संक्षेप में अपना परिचय देता हूँ। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर दो क्षत्रिय युवक झोंपड़ी बनाकर निवास कर रहे हैं। उनके निकट ही पत्थरों से एक घर बनाकर विघ्नेश्वर पुजारी के साथ मैं भी रह रहा हूँ।"

क्षत्रिय युवकों की बात सुनकर लुटेरों के नेता ने स्वर्णाचारी की ओर संदेह भरी दृष्टि से देखा और पूछा–"यहाँ से थोड़ी ही दूर पर वे क्षत्रिय युवक झोंपड़ी बनाकर रह रहे हैं? वे दोनों तपस्या तो नहीं कर रहे हैं न?"

"उन्हें तपस्या करने की क्या ज़रूरत है? दोनों युद्ध-विद्या में बड़े ही निपुण हैं, जंगल में शिकार खेलना, ज़रूरत पड़ने पर दुष्टों को दण्ड देना और अच्छे लोगों की रक्षा करना–ये ही उनके दैनिक कार्य हैं।" स्वर्णाचारी ने बड़े ही उत्साह के साथ ये शब्द कहे।

"ओह! ऐसी बात है!" इन शब्दों के साथ लुटेरों का नेता विकट हँसी हंस पड़ा और फिर बोला–"अब हमने गैण्डे की जाति के लोगों की फ़सलें काट डालीं, यह क्या दुष्ट कार्य होगा? यदि यह बात उन क्षत्रिय युवकों को मालूम हो जायगी तो वे क्या करेंगे?"

स्वर्णाचारी ने यह कहना चाहा कि लूटने का काम अव्वल दर्जे का दुष्ट कार्य है और यह बात मालूम होने पर क्षत्रिय युवक चुप नहीं रहेंगे, लेकिन फिर उसने यह भी सोचा कि ऐसा कहना तो जान-बूझ कर खतरे को मोल लेना ही होगा। तब वह झिझकते स्वर में बोला–"साहब, तुमने तो धर्मशास्त्रसंबंधी बड़ा ही पेचीदा सवाल पूछा। इसका उत्तर देने की क्षमता मुझमें नहीं है।"

17

"तुम बच गये!" हाँफते हुए लुटेरा का नेता बोला। क्षण भर ठहर कर फिर कहा–"तुमने क्षत्रिय युवकों की झोंपड़ी की बात बतायी, चलो भी तो वह झोंपड़ी हमें दिखाओ। ऐसे अच्छे लोगों का इस जंगल में रहना हम जैसे लोगों के लिए खतरनाक है।"

स्वर्णाचारी ने लुटेरों के नेता के शब्दों का भाव समझ लिया। उसने सोचा कि यह व्यक्ति उन दोनों क्षत्रिय युवकों का खात्मा करना चाहता है, पर पहले उन्हें सावधान कैसे किया जाय!
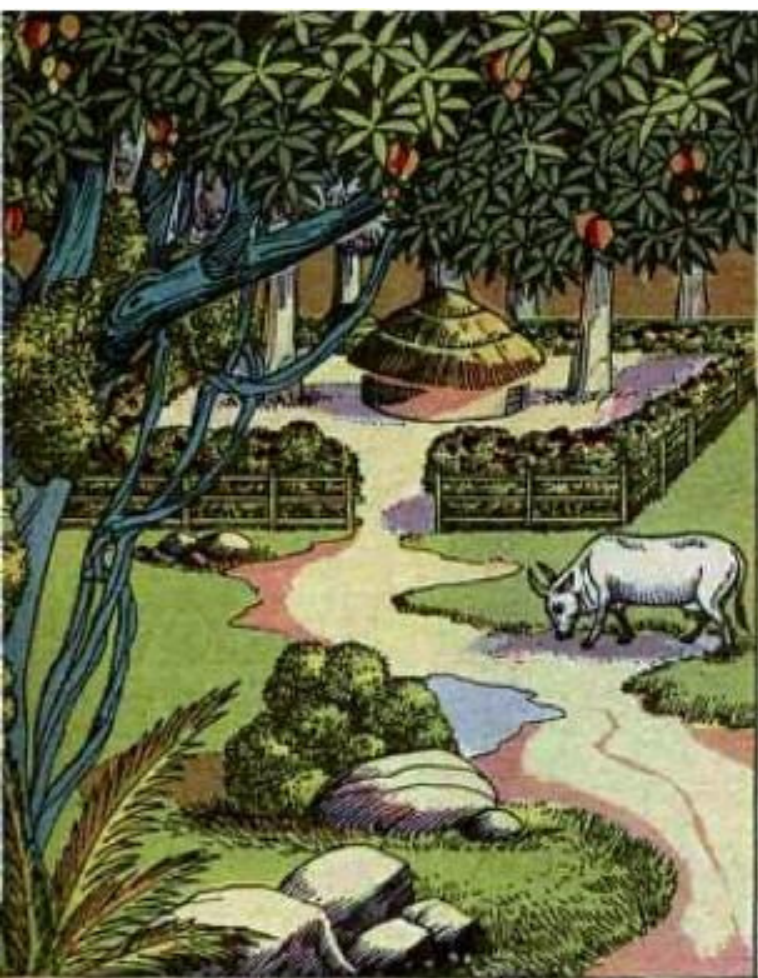
"सोच क्या रहे हो? भागने की कोशिश करना चाहते हो? खबरदार! तुम्हारी छाती में यह भाला घुसेड़ कर तुमको पेड़ पर लटकवा दूंगा।" लुटेरों के नेता ने गरज कर कहा।

स्वर्णाचारी ने सोचा कि अब केवल वार्तालाप के द्वारा विलंब करना जान के लिए भी खतरा है, इसलिए वह क्षत्रिय युवकों की झोंपड़ी की ओर बढ़ा। लुटेरों का नेता फिर ऊँट पर सवार हुआ और अपने दो अनुचरों को साथ चलने का आदेश दिया।

आगे आगे स्वर्णाचारी चल रहा था और उसके पीछे तीन लुटेरे चल रहे थे। थोड़ी ही देर में वे चारों एक झोंपड़ी के निकट पहुँचे। फूलों के पौधों तथा फलों से लदे वृक्षों के बीच पत्तों की बनी एक झोंपड़ी थी। उस झोंपड़ी के चारों तरफ़ घुटनों तक की ऊँचाई वाली कंटीली बाड़ी बनी थी। बाड़ी के बाहर एक गाय घास चर रही थी।

लुटेरों के नेता ने गाय को देखते ही कहा–"अबे स्वर्णाचारी! यह गाय तो दुधारू मालूम होती है! लेकिन इसका बछड़ा कहाँ?"

"महाशय, यह तो दुधारू गाय ही है। बछड़ा बाड़ी के उस पार कहीं घास चरता होगा!" स्वर्णाचारी ने उत्तर दिया। अब उसके सामने यह सवाल था कि क्षत्रिय

युवकों को दुश्मन के आने की खबर पहले ही कैसे दे? पर लुटेरे उसे दुधारू गाय के बारे में सवाल करते बातों में फंसा रहे हैं।

"महाशय, तुम लोग यहीं रहो। मैं पहले झोंपड़ी में जाकर देख आऊँगा कि क्षत्रिय युवक हैं कि नहीं।" स्वर्णाचारी ने अपने भोलेपन का परिचय देते हुए कहा।

इस पर लुटेरों का नेता धीरे से हंस पड़ा और बोला–"अबे, तुम्हारी यह चालाकी मेरे सामने चलने की नहीं है। सिंधु के रेगिस्तानों से यहां के इन जंगलों और पहाड़ों तक पहुँचते हमने तुम जैसे अनेक लोगों को देखे हैं। तुम बाड़ी के पास ही खड़े होकर चिल्लाओ! कहो कि दूर देश से मेहमान आये हैं! समझें! ज़ोर से पुकारो।"

लुटेरों के नेता की चाल का पता स्वर्णाचारी को लग गया। यदि वह यों चिल्लायगा कि मेहमान आये है तो क्षत्रिय युवक दोनों बेहथियार बाहर आ जायेंगे। तब उनका खात्मा किया जा सकता है–ये ही बातें लुटेरों का नेता सोचता होगा! अगर वह लुटेरों के नेता के कहे अनुसार नहीं चिल्लायेगा तो उसे खुद खतरे में फँसना होगा! अब क्या किया जाय?

"हूँ! संकोच क्यों करते हो? मेरे कहे अनुसार पुकारो!" इन शब्दों के साथ
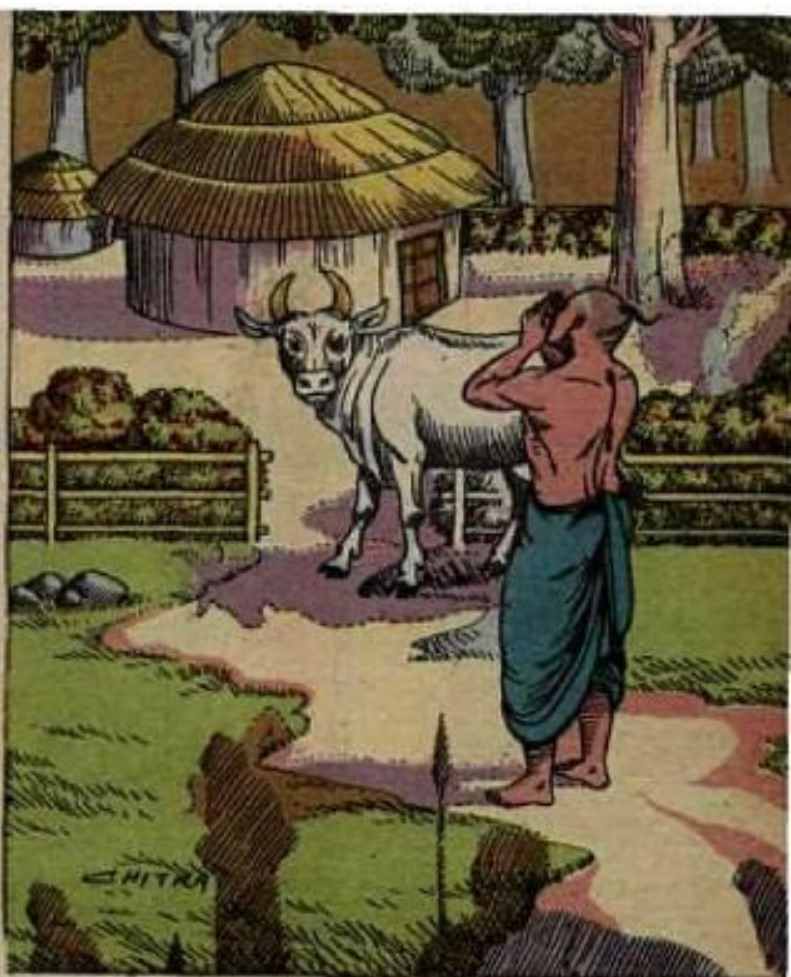
लुटेरों के नेता ने स्वर्णाचारी की पीठ पर भाला टिका दिया।

स्वर्णाचारी उच्च स्वर में चिल्ला पड़ा– "ऊँटों पर दूर देश से मेहमान चढ़ आये हैं।" स्वर्णाचारी के इस प्रकार दो-तीन बार चिल्लाने पर भी झोंपड़ी में से कोई बाहर न आया।

तब स्वर्णाचारी ने खतरे के टलने की खुशी में कहा–"साहब! लगता है कि ये क्षत्रिय युवक शिकार खेलने बाहर गये हैं!"

"संदेह ही क्यों, एक बार और पुकारो?" लुटेरों के नेता ने कहा।

स्वर्णाचारी इस बार और ज़ोर से चिल्ला पड़ा। पर झोंपड़ी में से कोई

बाहर न आया, तब लुटेरों के नेता ने अपने एक अनुचर को आदेश दिया कि वह ऊँट पर सवार हो स्वर्णाचारी पर निगरानी रखे, ताकि वह भाग न जाय, वह ऊँट से उतर पड़ा और दूसरे अनुचर को साथ ले बाड़ी पार करके झोंपड़ी के पास पहुँचा।

झोंपड़ी के द्वार पर एक टट्टी बंधी हुई थी। उसे देखते ही लुटेरों का नेता अपने अनुचर से बोला-"स्वर्णाचारी का कहना सच है। क्षत्रिय युवक दोनों झोंपड़ी के भीतर नहीं हैं। हम अन्दर जाकर देखेंगें। शायद कोई क़ीमती चीज़ मिल जाय!"

इसके बाद वे दोनों द्वार पर बंधी टट्टी को खोल झोंपड़ी के भीतर चले गये। उन्हें कोई क़ीमती चीज़ हाथ न लगी। दीवारों पर बाघ, भालू, हिरण इत्यादि जानवरों के चमड़े लटक रहे थे। झोंपड़ी के एक कोने में दो भाले, धनुष और बाण टिका कर रख दिये गये थे।

"ये दोनों अच्छे धनुर्धारी मालूम होते हैं। दूर से दुश्मन या जंगली जानवर को मारने के लिए बाण से बढ़कर कोई अच्छा हथियार नहीं है। हमें धनुस-बाण चलाना भी सीखना जरूरीं है। तुम उन धनुष और बाणों को ले लो।" लुटेरों के नेता ने अपने अनुचर को सचेत किया।

अपने नेता का आदेश पाकर लुटेरा आगे बढ़ा और धनुष और बाण लेकर अपने कंधे पर रख लिया। लुटेरों के नेता ने झोंपडी के चारों ओर ध्यान से देखा, मगर कोई क़ीमती चीज़ न पाकर निराश हो बाहर चला आया।

"स्वर्णाचारी, क्षत्रिय युवकों ने इस झोपड़ी में खाने के अनाज तक छिपा नहीं रखे हैं। बाण और हिरणों के चमड़ों को छोड़ हाथी दाँत तक दिखाई नहीं देते हैं। क्या वे जंगली हाथियों

का शिकार नहीं करते?" लुटेरों के नेता ने पूछा।

"महाशय, ये क्षत्रिय युवक खाने के वास्ते छोड़ किसी अन्य जंगली जानवर तक का वध नहीं करते! तुमने जिन बघ चर्मों को देखा, उन बाघों को भी क्षत्रिय युवकों ने अपनी आत्मरक्षा के लिए ही मार डाले थे।" स्वर्णाचारी ने समझाया।

"ओह! तब तो ये लोग हाथी दांतों के मूल्य तक नहीं जानते हैं।" लुटेरों के नेता ने व्यंगपूर्वक कहा।

इसके बाद उसने अपने अनुचरों को गाय की ओर इशारा करके कहा-"ऊँट का दूध पीते-पीते ऊब गये हैं। उस गाय के गले में रस्सा डालकर उसे खींच लाओ! लेकिन उसका बछड़ा कहाँ?" चारों ओर नज़र दौड़ाते लुटेरों के नेता ने कहा।

एक लुटेरा गाय के कंठ में रस्सा डाल उसे ऊँट की ओर खींच कर ले जाने लगा। गाय रस्से को तुड़वाने की कोशिश करते रंभाने लगी। उस आवाज़ को सुनते ही बछड़ा झोंपड़ी के पीछे से दौड़ आया।

"वाह! मैंने जो सोचा था, वही हुआ, अब इस स्वर्णाचारी को भी ऊँट पर चढ़वा दो।" लुटेरों का नेता बोला।
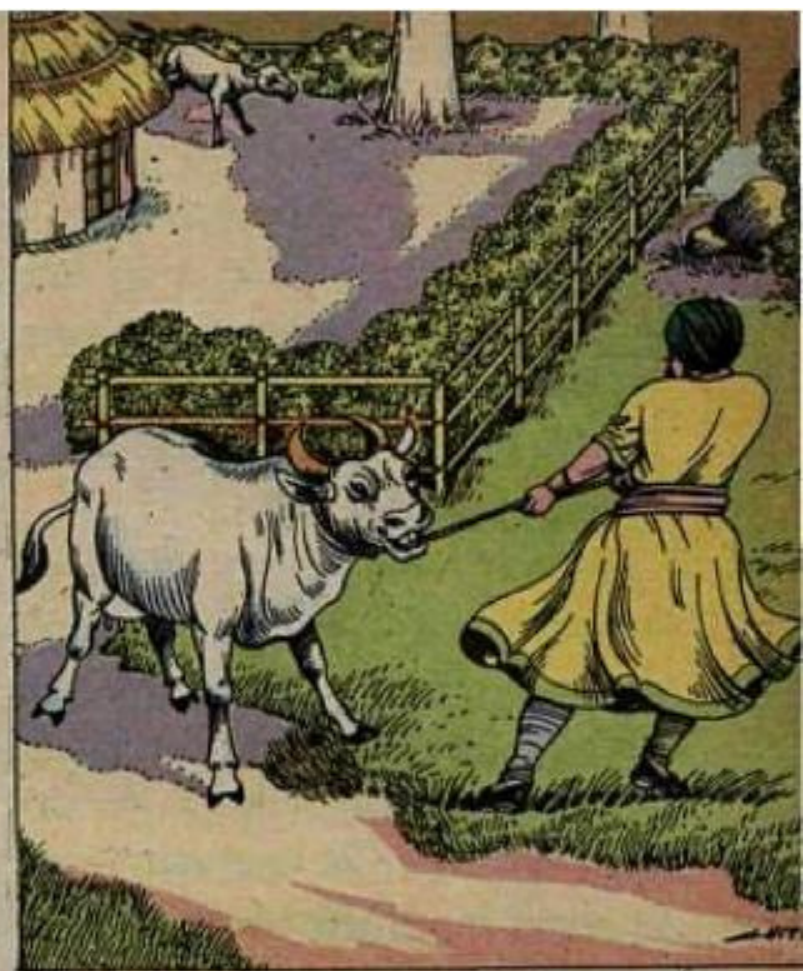
ये शब्द सुनते ही स्वर्णाचारी थर-थर कांप उठा और बोला-"साहब, मुझे अपने साथ मत ले जाओ! मैं यहाँ पर मजे में हूँ। मुझे अपनी ज़िंदगी यहीं पर काटने दो।"

"यह सब नहीं चलने का। हम जहाँ रहते हैं, वहाँ पर तुम्हें अच्छे-अच्छे मकान बनाने होंगे, कुछ ही दिनों में हम इस प्रदेश के चारों तरफ़ चार सौ कोसों तक अधिकार करके शासन करने जा रहे हैं। अब तुम जहाँ पर महल बनाने जा रहे हो, वह प्रदेश राजधानी नगर बनेगा। मैं तुमको अपने दरबारी वास्तुशास्त्री बना कर तुम्हारा सत्कार करूँगा।" लुटेरों के नेता ने समझाया।

"महाशय, मुझे ऐसा कोई पद नहीं चाहिये, मैं यहीं पर आराम से ..."

स्वर्णाचारी के शब्द पूरे भी न हो पाये थे, तभी एक लुटेरे ने उसका कंठ पकड़ कर उसे ऊँट पर डाल दिया। स्वर्णाचारी उठ खड़ा हुआ और चिल्लाने लगा– "दुश्मन से मेरी रक्षा करो।"

झोंपड़ी के निकट प्रवेश करनेवाले विघ्नेश्वर पुजारी ने अपने मित्र स्वर्णाचारी की चिल्लाहट सुनी। उसने सोचा कि स्वर्णाचारी किसी खतरे में फंसा हुआ है, यह सोचते वह तेजी से कुटीर की ओर बढ़ा। उसने देखा कि स्वर्णाचारी को ऊँट पर चढ़ाया गया है और एक लुटेरा गाय के गले में रस्सा बांध उसे खींच कर ले जा रहा है।

विघ्नेश्वर पुजारी के मन में अचानक कोई विचार आया। क्षत्रिय युवक सिंह के एक शावक को बचपन में ही लाकर पाल रहे थे। वह शावक क्षत्रिय युवकों के झोंपड़ी में रहते समय स्वेच्छा के साथ चारों तरफ़ घूमता रहता है, लेकिन जब वे बाहर चले जाते हैं, तब उसे झोंपड़ी के पिछवाड़े में बांस के पिंजड़े में छोड़ जाते हैं।

अब विघ्नेश्वर पुजारी के मन में यह विचार आया कि सिंह के शावक को बांस के पिंजड़े से मुक्त करने पर स्वर्णाचारी तथा गाय को छुड़ाया जा सकता है। गाय और सिंह के शावक के बीच अच्छी मैत्री थी। गाय की रंभाहट सिंह के शावक को उकसाने में मदद हो सकती है और उसे लुटेरों पर उकसाया जा सकता है।

विघ्नेश्वर पुजारी दौड़कर चला गया और पिंजड़े में से सिंह के शावक को मुक्त किया। बाहर निकलते ही गरजते हुए वह लुटेरों की ओर दौड़ पड़ा। उसे देखते ही ऊँट भड़क उठे। एक लुटेरा अपनी पकड़ के ढीली होने से ऊँट से नीचे गिर पड़ा। सिंह का शावक छलांग मारकर उस पर कूद पड़ा और उसका गला दबाया।

(और है)

अनुचित दण्ड

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया।

पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, हो सकता है, तुम बिना किसी प्रकार का अपराध किये इस प्रकार श्रम उठा रहे हो! कभी कभी ऐसा होता है कि किसी प्रकार का अपराध किरे बिना कुछ लोगों को असहनीय कष्ट झेलने पड़ते हैं। इसके उदाहरण के रूप में मैं तुम्हें यज्ञसोम की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलांने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: यज्ञस्थल नामक एक अग्रहार में यज्ञसोम नामक एक धनी ब्राह्मण रहा करता था। उसके हरिसोम तथा देवसोम नामक दो पुत्र थे। उन दोनों लड़कों का बचपन आराम से बीता। उन्हीं दिनों में यज्ञसोम का सारा धन

वेताल कथाएँ

जाता रहा। कुछ समय बाद उसकी पत्नी का देहांत हो गया और इसके बाद उसकी मृत्यु भी हो गयी। इस प्रकार यज्ञसोम के पुत्र दरिद्र हो गये। उन्हें सिवाय मधुकरी करने के कोई जरिया न था।

हरिसोम और देवसोम अपने नाना के घर चल दिये। रास्ते में भीख मांगते बड़ी मुश्किल से वे ननिहाल में पहुंच गये। गाँव में पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि उनके नाना और नानी भी गोलोकवासी हो गये हैं। लेकिन उनके मामा यज्ञदेव और ऋतुदेव ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। खाना-कपडा देकर उन्हें पढ़ाने भी लगे। कुछ साल बीत गये। यज्ञदेव और ऋतुदेव भी धीरे धीरे निर्धन हो गये। एक दिन उन्होंने अपने भानजे को बुलाकर समझाया–"बेटे, हम दरिद्र हो गये हैं। गाय-भैंस चराने के लिए हम नौकर नहीं रख सकते। आज से तुम दोनों गाय-भैंसों को चराने की जिम्मेदारी ले लो।"

हरिसोम और देवसोम अपने मामा के मुंह से ये बातें सुनकर दुख से भर उठे। मगर कोई चारा न देख दोनों ने मवेशी चराने को मान लिया। वे रोज सुबह मवेशियों को लेकर जंगल में चले जाते, संध्या को घर लौटते। लेकिन दुर्भाग्य और भी उनका पीछा कर रहा था। एक दिन एक गाय को बाघ उठा ले गया। दूसरी गाय को चोर भगा ले गये। अपने भानजे की असमर्थता पर मामा बहुत ही चिंतित थे। दो गायों के नष्ट होने से उनकी गरीबी और बढ़ गयी। इससे भी बढ़कर भयंकर विपत्ति का सामना उन्हें तब करना पड़ा जब उनकी एक गाय और एक बकरी कहीं भाग गयीं।

इससे हरिसोम और देवसोम डर गये। उन दोनों ने तुरंत मवेशियों को अपने मामा के घर हांक दिया और खो गयी गाय और बकरी की खोज में जंगल की ओर भाग गये। उन्हें एक जगह बकरी का कलेवर दिखाई दिया।

"इस बकरी को हमारे मामाओं ने यज्ञ के वास्ते रख छोड़ा था। अगर उन्हें यह मालूम हो जाय कि इसे बाघ खा चुका है, उन्हें बड़ा क्रोध आयगा। इसलिए हम बची हुई बकरी को जला कर खा डालेंगे, बाक़ी मांस को लेकर कहीं भाग जायेंगे। वहाँ पर भिक्षाटन करते अपने दिन बितायेंगे।" दोनों भाइयों ने यह निश्चय कर लिया और वहीं पर आग जला कर बकरी को जलाने लगे।

इस बीच उनके मामा ने देखा कि दुपहर को ही मवेशी घर लौट आये हैं और उनके भानजों का पता नहीं है, इसलिए वे उनकी खोज में जंगल में आ पहुँचे। दोनों भाई एक जगह बकरी को जलाते उन्हें दिखाई दिये। उन्हें देखते ही मामा नाराज हो उठे और शाप दे दिया—"अरे दुष्टो, मांस के लोभ में पड़कर यज्ञ के लिए सुरक्षित बकरी को तुम लोगों ने मार डाला, इस अपराध के लिए तुम दोनों ब्रह्मराक्षस बन जाओ।"

अपने मामाओं को आते देख दोनों भानजे भागने लगे, मगर मामाओं के शाप के कारण वे ब्रह्मराक्षस हो गये। ब्रह्मराक्षसों के रूप में घूमते वे एक बार एक योगी को खाने गये, इस पर योगी ने उन्हें पिशाच बन जाने का शाप दे दिया।

पिशाच बनते ही दोनों ने एक ब्राह्मण की गाय को मारना चाहा, तब उस ब्राह्मण ने उन्हें चाण्डाल बन जाने का शाप दिया। इस पर वे धनुष और बाण धारण करके सर्वत्र घूमने लगे। भूख से तड़पते हुए वे दोनों चोरोंवाले एक गाँव में पहुँचे। गाँव का पहरा देनेवालों ने दोनों को बन्दी बनाया। उन्हें चोरों के नेता के सामने हाजिर किया।

चोरों का नेता उनका वृत्तांत सुनकर पसीज उठा। उनके बंधन खुलवा कर खाना दिलाया, तब कहा—"भाइयो, तुम दोनों हमारे साथ रह जाओ। तुम्हें किसी भी प्रकार का डर नहीं है। साथ

ही तुम्हे किसी बात की कमी न होगी।" उस दिन से वे दोनों भाई चोरों के साथ रहते चोरी करने लगे। चोरी करने में अपनी सामर्थ्य का परिचय देकर वे चोरों के दलों के नेता भी बन बैठे।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा– "राजन! यज्ञसोम के पुत्रों ने कोई अपराध नहीं किया, फिर भी उन्हें इतनी यातनाएं क्यों भोगनी पड़ीं? समाज ने उनके प्रति क्रूरतापूर्वक व्यवहार किया, फिर भी चोरों ने उनके साथ स्नेह का व्यवहार किया! इसका कारण क्या है? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "सामाजिक धर्म में स्वार्थ होता है। यह धर्म जहाँ अमल में होता है, वहाँ की व्यवस्था ही भले-बुरा का निर्णय करती है। स्वार्थी व्यक्ति जब नुक़सान उठाते हैं तब नाराज़ हो जाते हैं। यज्ञसोम के पुत्र परिस्थितियों के कारण ही कष्टों के शिकार हो गये। मामाओं का अपने भानजों पर प्रेम की कमी नहीं है, लेकिन उनके स्वार्थ में विघ्न पैदा होने के कारण उन्होंने अपने भानजों को ब्रह्मराक्षस बन जाने का शाप दे दिया है। योगी का उन्हें पिशाच बन जाने का शाप देना, ब्राह्मण का उन्हें चाण्डाल बना देना, ये दोनों शाप नहीं कहलायेंगे। एक तरह से ये दोनों उनके लिए वरदान ही हैं। क्योंकि ब्रह्मराक्षस से पिशाच का जीवन बेहतर है, पिशाच से चाण्डाल बन जाना और भी उत्तम है। अब रही चोरों की बात! चोर तो सामजिक प्राणी हैं। उनके समाज में व्यक्ति का स्वार्थ नहीं होता, सब में समानता होती है। यज्ञसोम के पुत्र ऐसे समाज में मिल गये जहाँ उन्हें कोई कष्ट नहीं देता, उस वातावरण के अनुकूल वे भी चोरियाँ करते सुखी बने।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
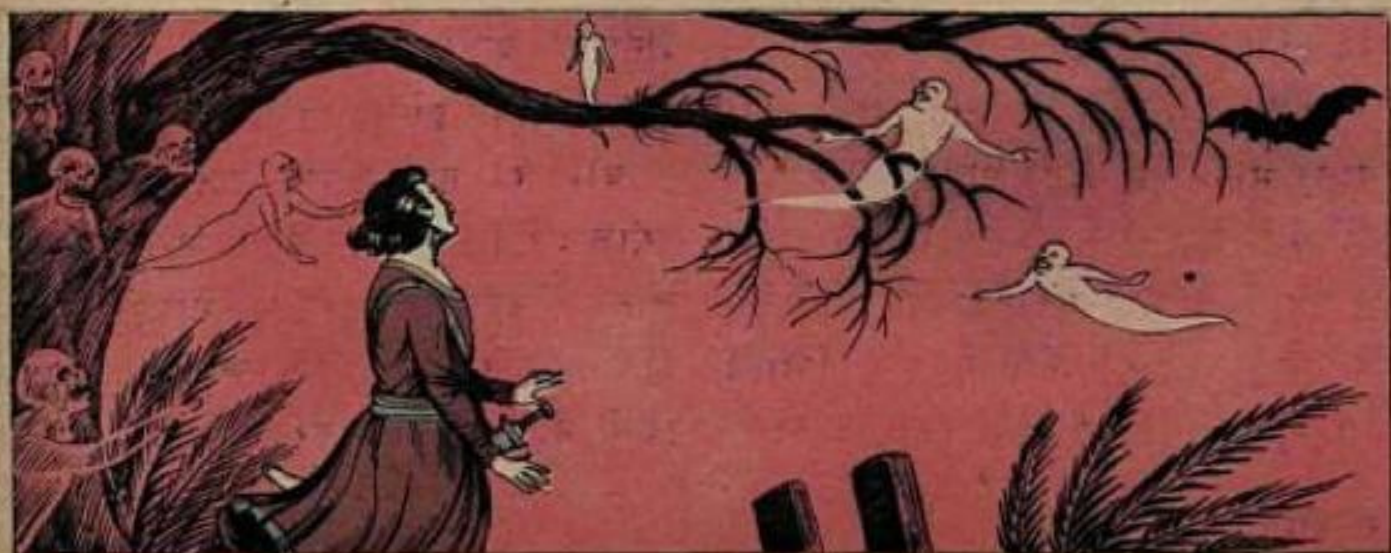
राजा का ज्ञाति

एक हजार साल पहले की बात है। वंग देश पर एक बड़ा विवेकी और धर्मात्मा राजा शासन करता था। उसके पास अपार संपत्ति थी। वह दिल खोल कर दान देता था। कोई भी याचक उसके यहाँ से खाली हाथ नहीं लौटता था।

एक दिन दरबार लगा हुआ था। एक बूढ़े गरीब ने द्वार के पास पहुँच कर पहरेदार से राजा के दर्शन कराने की बिनती की।

"तुम कौन हो? किस काम से आये हो?" पहरेदार ने बूढ़े से पूछा।

"मैं राजा का ज्ञाति हूँ। उनसे जरूरी बात करनी है।" बूढ़े ने जवाब दिया।

पहरेदार ने यह समाचार राजा को दिया। राजा को आश्चर्य हुआ, फिर भी बूढ़े को दरबार में भेजने की अनुमति दी। सभी दरबारी राजा के ज्ञाति को देखने के लिए उत्सुक हो उठे।

थोड़ी देर में बूढ़े ने दरबार में प्रवेश किया, झुक कर राजा को प्रणाम किया। बूढ़े के हाथ में एक लाठी थी। उसके कपड़े फटे-पुराने थे।

"तुम कौन हो?" राजा ने पूछा।

"महाराज, मैं आपकी काकी का पुत्र हूँ। इस रिश्ते से मैं आपका ज्ञाति हूँ।" बूढ़े ने उत्तर दिया।

राजा ने हँसकर पूछा—"मेरे बड़े भाई, कुशल हो न?"

"कुशल की बात क्या बताऊं, महाराज? मेरी ज़िंदगी में बिल्कुल तबदीली हो गयी है। मेरा सुंदर घर शिथिल होता जा रहा है। मेरे बत्तीस सेवक जो बड़ी श्रद्धा से मेरी सेवा कर रहे थे, एक-एक कर के निकल गये हैं। बाहर का काम जहाँ पहले दो से बनता था, अब उसके लिए तीन की जरूरत पड़ रही है। मेरे

निकट के दो मित्र दूर चले गये हैं। जो दो मित्र दूर थे, अब निकट के हो गये हैं।" बूढ़े ने समझाया।

"तब तो तुम मेरे पास क्यों आये हो?" राजा ने पूछा।

"महाराज, यदि मेरा शेष जीवन आराम से बिताना है तो आप की सहायता की जरूरत है।" बूढ़े ने उत्तर दिया।

राजा ने बूढ़े के हाथ में एक रुपया रख दिया। इस पर बूढ़े ने निराश भरे स्वर में कहा–"महाराज, यह क्या, मैंने सोचा था कि कम से कम एक हजार रुपये देंगे। आपकी दानशीलता की लोग भारी प्रशंसा करते हैं। मगर आपके ज्ञाति के विषय में यह बात सच नहीं निकली।"

"भाई साहब! फिलहाल खज़ाना खाली हो गया है।" राजा ने कहा।

"खज़ाना खाली हो तो लंका में क्यों नहीं जाते? वहाँ पर अपार सोना भरा पड़ा है।" बूढ़े ने कहा।

"लंका में पहुँचना हो तो समुद्र को पार करना होगा। मैं कैसे पार करूँ?" राजा ने पूछा।

"यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। पहले मुझे लंका में भेज दीजियेगा तो आप मेरे पीछे पैदल लंका में प्रवेश कर सकते हैं।" बूढ़े ने समझाया।

राजा ठठा कर हँस पड़ा और खजाने से एक लाख रुपये मंगवा कर बूढ़े को दे दिया। बूढ़ा विदा लेकर चला गया।

इसके बाद दरबार में कानाफूसी शुरू हो गयी। राजा और बूढ़े के बीच जो वार्तालाप हुआ, दरबारियों की समझ में बिलकुल न आया। इस पर राजा ने दरबारियों को समझाया।

"मैं समझता हूँ कि बूढ़े की बातें तुम लोग बिलकुल समझ न पाये। उसने कहा कि वह मेरा ज्ञाति है, याने मेरी काकी का पुत्र है। लोगों में यह प्रतीति है कि ज्येष्ठा देवी और लक्ष्मीदेवी सगी बहनें हैं। बूढ़े का तात्पर्य है कि मैं लक्ष्मी का पुत्र हूँ और बूढ़ा दरिद्र देवी ज्येष्ठादेवी का पुत्र है। यही हमारे बीच ज्ञाति का रिश्ता है। शिथिल होनेवाला घर उसका शरीर है। उसके बत्तीस नौकर उसके बत्तीस दाँत हैं। वे सब उखड़ गये हैं। बाहर के काम के लिए जहाँ पहले दो की जरूरत थी और अब तीन की जरूरत है, इसके माने यह है कि पहले जहां वह दो पैरों से चलता था, अब उसे लाठी की भी जरूरत आ पड़ी है। पहले जो दो मित्र दूर थे और अब वे उसके निकट हो गये हैं, वे दोनों मित्र उसकी दो आँखें हैं। पहले जो निकट थे और अब जो दूर हो गये हैं, वे दोनों मित्र उसके कान हैं। इसका मतलब है कि उसकी आँखें और कान ठीक से काम नहीं दे रहे हैं, इन सब से बढ़ कर उसने एक अक्लमंदी की बात कही, मैं उसे लंका भेज दूँ तो समुद्र सूख जायगा और मैं पैदल लंका में जा सकता हूँ। मैंने जब कहा कि खजाना खाली हो गया है, इसके उत्तर में बूढ़े ने यह बात कही है। उसकी बातों का मतलब यह है कि वह दरिद्र देवी का पुत्र है, इसलिए जब वह मेरे पास आया, तब खजाना खाली हो गया है। उसे देने को कुछ नहीं रह गया है। केवल इसी एक बात के लिए मैंने उसे एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया है।

इस पर सभी दरबारी बूढ़े की चातुरी और राजा की अक्लमंदी पर प्रसन्न हुये।

कोई फर्क नहीं

एक गाँव में एक लखपति था, वह अव्वल दर्जे का कंजूस था। एक भिखारी भीख मांगते लखपति के घर आया, उस वक्त वह घर के आगे चबूतरे पर बैठा हुआ था।

"बाबूजी, थोड़ा दान दीजिये!" भिखारी ने पूछा।

"अबे, जा, जा, कुछ नहीं है।" लखपति ने कहा–"कम से कम फटा-पुराना कपड़ा हो तो दे दीजिये।" भिखारी ने फिर पूछा।

"नहीं है, रे! जा!!" लखपति ने जवाब दिया।

"खाने को कुछ हो तो दे दीजिये, बाबूजी।" भिखारी ने इस बार दीनता पूर्वक पूछा।

"जा बे, बिलकुल नहीं है।" लखपति ने खीझकर कहा।

"कम से कम एक टो बीड़ी का ठुकड़ा हो, तो दे दीजिये।" भिखारी ने फिर पूछा।

लखपति को क्रोध आया और डांटते हुए बोला–"अरे, मैं तुझी से कहता हूँ कि मेरे यहाँ कुछ नहीं है।"

"अच्छी बात है, बाबूजी! हम दोनों की हालत एक-सी है। आप भी मेरे साथ चलिए, दोनों मिल कर भीख मांगेंगे।" भिखारी ने कहा।

दो भिखारी

दक्षिण के एक गाँव में राघव और शंकर नामक दो मित्र थे। उनमें पहला वैष्णव था और दूसरा शैव था। दोनों मधुकरी करने साथ चलते थे, जिस गाँव में पहुँचने पर अंधेरा फैल जाता, वे उस रात को उसी गाँव में आराम करते और सुबह भीख मांगने दो अलग रास्तों में चले जाते।

राघव भीख मांगते एक गली में घुस पड़ा। एक घर के सामने खड़े हो चिल्ला पड़ा–"भाई, थोड़ी सी भीख दे दो।"

उस घर की मालिकिन अपनी लड़की से परेशान थी। बच्ची के हठ करते तंग आ गयी और उसे डराने लगी–"अगर तुम मुझे फिर तंग करोगी तो तुमको उस वैष्णव भक्त के हाथ सौंप दूंगी।" इसके बाद उस गृहिणी ने भिखारी को भीख दी और घर के अन्दर चली गयी। लेकिन भिखारी दर्वाज़े पर खड़ा ही रह गया। उसने गृहिणी से कहा–"माई, तुमने अभी कहा कि अपनी लड़की को दे दोगी, दे दो।"

गृहिणी को बड़ा क्रोध आया, वह बोली–"क्या तुम्हें लड़की देनी है? मेरे पति खेत में गये हैं। लौटने पर वे ही देंगे।"

राघव दुपहर तक वहीं बैठा रहा। घर का मालिक लौट आया। उसने द्वार पर याचक को देख गरज कर अपनी पत्नी से पूछा–"अरी, इसे भीख देकर तुमने क्यों नहीं भेजा?"

"हमारी बेटी ऊधम मचा रही थी, इसलिए मैंने यूँ ही उसे धमकी दी कि ऐसे ही शोर मचायेगी तो मैं तुम्हें वैष्णव भक्त राघव को सौंप दूंगी। इस पर यह राघव हठ किये बैठा है कि उसे लड़की दे।" पत्नी ने अपने पति को समझाया।

ये बातें सुनने पर किसान को बड़ा क्रोध आया। उसने लाठी लेकर राघव को

देवकीनंदन शर्मा

31

खूब पीटा। राघव भाग खड़ा हुआ। मगर उसके मन में शंकर को भी पिटवाने की दुर्बुद्धि पैदा हुई।

राघव जब सराय को लौट आया, तब शंकर ने पूछा–"राघव, तुमने देरी क्यों कर दी? क्या बात है?"

"सामनेवाली गली के छोर पर एक धनी किसान का घर है। उस घर का मालिक अपनी बेटी की वर्ष-गाँठ मना रहा था। उसने मुझे जबर्दस्ती रोका, लड्डू, जलेबी और पेड़े खूब खिलाये। मैं बड़ी मुश्किल से खा पाया, मैं तुम्हारा बहुत इंतजार कर रहा था कि उधर से निकलोगे तो तुम्हें भी खिलवा दूँ। लेकिन तुम नहीं आये।" राघव ने कहा।

राघव की बातें सुनने पर शंकर के मुँह में पानी भर आया। उसने पूछा–"उस किसान के घर का पता मुझे दो।"

"तुम सीधे इस गली से होकर जाओगे तो तुम्हें नारियल के पेड़वाला घर दिखाई देगा। उस घर में जाकर पूछो–"माई, तुमने अपनी बेटी देने की बात बताई थी, दे दो।" राघव ने समझाया।

लड्डू, जलेबी और पेड़े खाने की लालसा रखनेवाले शंकर के मन में यह संदेह पैदा नहीं हुआ कि उस घर की गृहिणी से ये बातें क्यों कहनी हैं? वह तुरंत किसान के घर पहुँचा और राघव के कहे अनुसार वे बातें कह दीं।
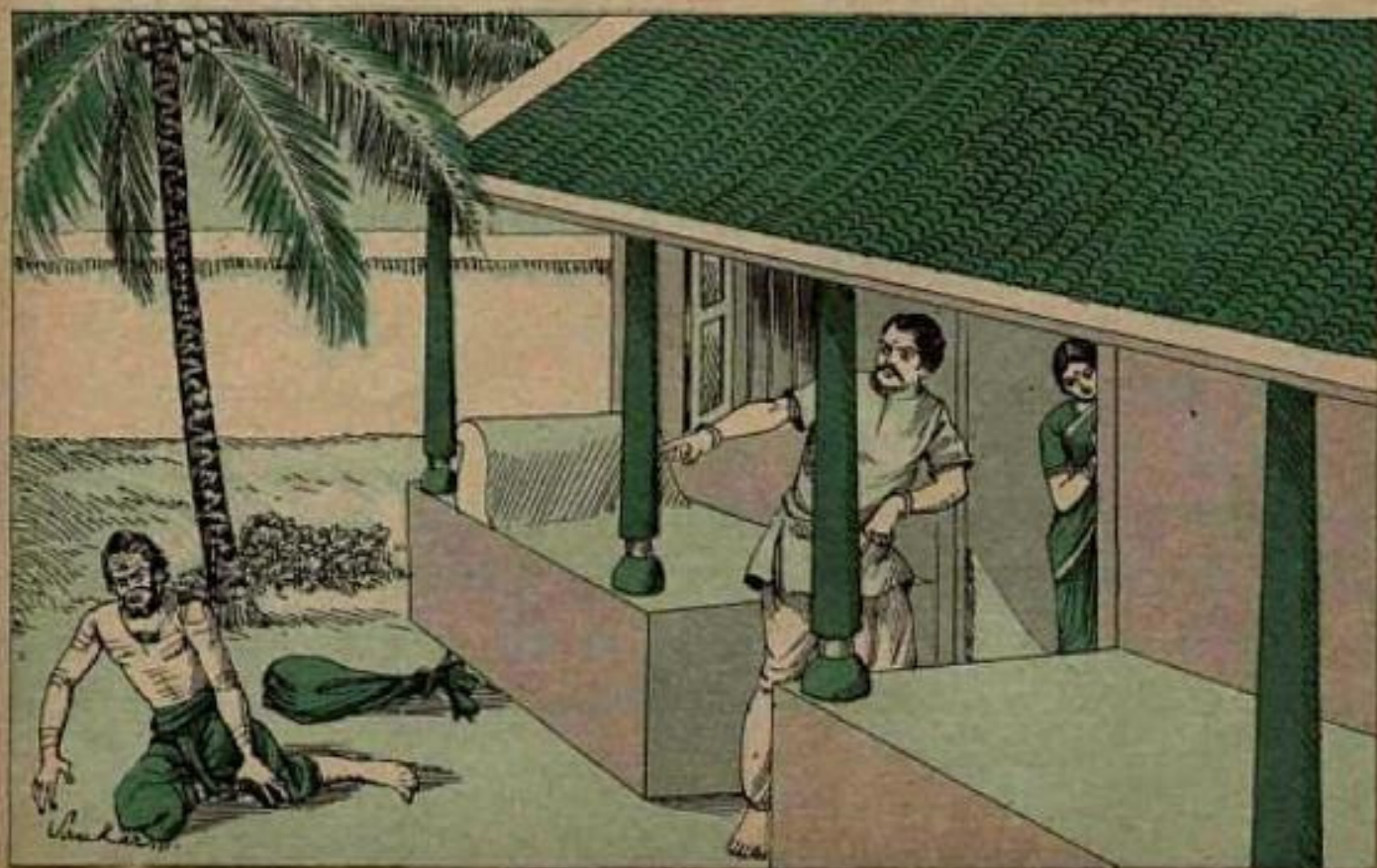
"अरे क़मबख़्त! तुम्हें एक बार पीटा तो शर्म नहीं आयी?" इन शब्दों के साथ किसान ने शंकर को मार भगाया।

शंकर ने सराय को लौटने पर राघव से कुछ नहीं कहा। राघव ने भी शंकर से इस संबंध में नहीं पूछा। मगर शंकर के मन में राघव के प्रति बदला लेने की इच्छा पैदा हुई।

उसे एक उपाय सूझा। उसने कहा– "राघव! तुम्हारी बिंदी की रेखाएँ सीधी हैं और मेरी आड़ी हैं। इसलिए इस सराय की छत की सीधी लकड़ियाँ तुम्हारी हैं और आड़ी मेरी हैं। देखते हो न, तुम्हारी लकड़ियों पर मेरी लकड़ियाँ हैं।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता!" ये शब्द कहते राघव छत पर गया और छत की आड़ी लकड़ियों को उखाड़कर फेंक दिया। इस पर शंकर ने भी छत पर जाकर सीधी लकड़ियों को उखाड़ फेंका।

थोड़ी देर बाद शंकर ने राघव से कहा– "हम दोनों ने मिलकर छत की लकड़ियों को उखाड़ कर फेंक दिया। सवेरा होते ही गाँववाले आकर हम से पूछेंगे कि किसने ये लकड़ियाँ उखाड़ डालीं? तब तुम कुछ मत बोलो। मेरी बिंदी की रेखाएँ आड़ी हैं, इसलिए मैं अपने सर को आड़े हिलाऊंगा, तुम्हारी बिंदी की रेखाएँ सीधी हैं, इसलिए तुम सीधे हिला दो।"

राघव यह बात भूल ही गया कि सीधे हिलाने में 'हाँ' है और आड़े हिलाने से 'नहीं'। सवेरा होते ही गाँव के बुजुर्गों ने आकर पूछा–"किसने ये सब लकड़ियाँ उखाड़कर फेंक दी है?" इस पर शंकर ने अपना सर आड़े हिलाया और राघव ने सीधे। बुजुर्गों ने सोचा कि राघव ने ही छत की लकड़ियाँ उखाड़कर फेंक दी है, इसलिए उसे खूब पीटा।

वे दोनों जब सराय से जाने लगे, तब राघव ने शंकर से पूछा–"वाह, तुमने यह क्या कर ड़ाला?"

"तुमने मुझे उस किसान से क्यों पिटवाया? आइंदा कभी ऐसा काम न करो।" शंकर ने कहा।

पगली

एक गाँव में एक किसान था। उसकी एक पागल लड़की थी। वह बोलती यादा थी। उसकी बकवास की वजह से कोई रिश्ता बैठता न था। उसके माँ-बाप ने उसे समझाया कि कोई वर रिश्ता क़ायम करने के लिए उसे देखने आवे तो मौन रहे, पर कोई फ़ायदा न रहा।

एक दिन कोई वर उस कन्या को देखने आनेवाला था, इसलिए माँ ने अपनी कन्या का अलंकार किया और समझाया–"बेटी, ये पान तुम अपने पास रखो, वर के देहली पर पैर रखते ही तुम ये पान अपने मुँह में डाल लो, बैठक में आते ही उसे चबाओ, फिर देहली पार करके चले जाने पर इसे थूक दो।"

थोड़ी देर बाद वर कन्या को देखने आया। वर के देहली पर क़दम रखते ही पगली ने अपनी माँ से पूछा–"माँ, देहली पर आया है, क्या मुँह में डाल लूँ?"

यह बात सुनने पर वर घबराते हुए बैठक में आ पहुँचा।

"माँ, अब तो वह बैठक में आ गया है, चबाऊँ?" पगली ने पूछा।

इस पर वर घबरा कर बाहर दौड़ पड़ा।

"देहली पार कर चुका है, क्या थूक दूँ?" पगली फिर चिल्ला उठी।

वर ने फिर मुड़ कर नहीं देखा, वह भाग खड़ा हुआ।

पति की खोज में
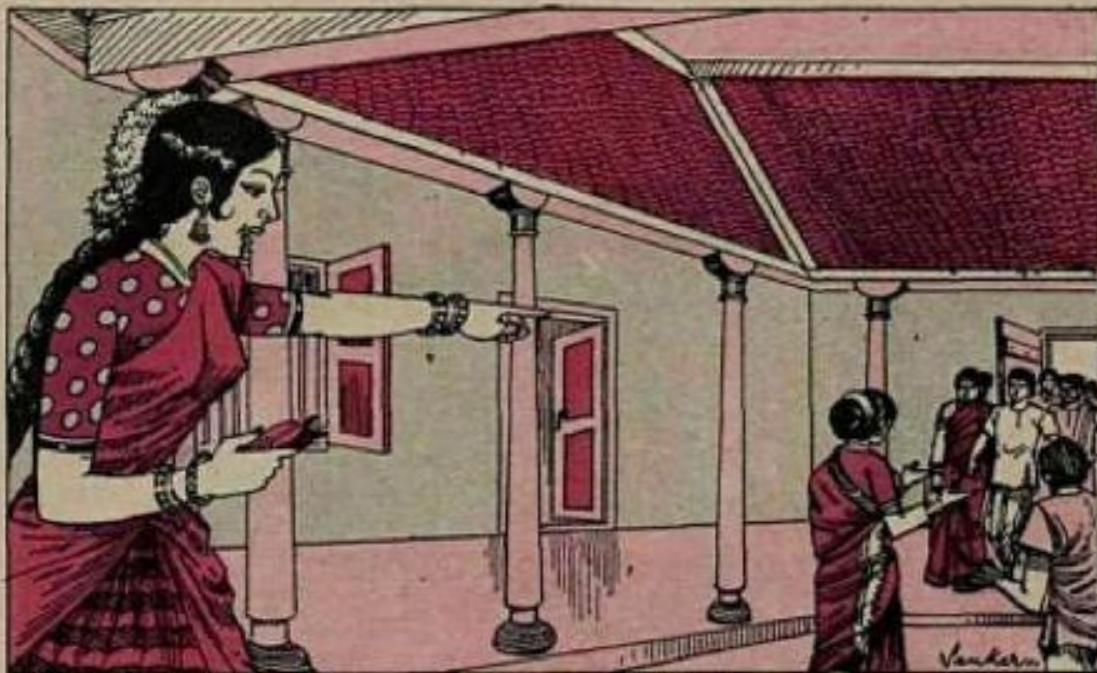
[२]

उस गाँव में एक बूढ़ी पूनी कातते मल्लिका को दिखाई दी। बूढ़ी गुनगुना रही थी–"यह बुद्धवर्मा कैसा नीच है?"

"बूढ़ी माई, तुम क्यों उस महाशय को गालियाँ देती हो?" मल्लिका ने पूछा।

"बेटा, क्या तुमने नहीं सुना? सब कोई उसकी निंदा कर रहे हैं!" बूढ़ी ने मल्लिका को पुरुष समझ कर कहा।

उसी वक़्त यह ढिंढोरा सुनाई दिया–"बुद्धवर्मा की बहू का जो पता बतायेगा, उसे खूब पुरस्कार दिया जायगा। जिसने उसे छिपाया है, उसका सर काट दिया जायगा, यह राजा का आदेश है!"

ब्राह्मण युवती आनंद के अश्रु गिराते हुए बोली–"वाह, मल्लिका! तुम भाग गयी हो? उस कुबड़े के साथ गृहस्थी मत चलाओ! तुम्हारा पति तो यज्ञगुप्त है।"

इस पर मल्लिका का उस बूढ़ी पर विश्वास जम गया। उसने अपना सारा वृत्तांत बूढ़ी को सुनाया। बूढ़ी ने बड़े ही वात्सल्य के साथ मल्लिका का आलिंगन किया, उसे भीतर ले जाकर उसका कापालिक वेश हटाया, स्नान कराकर आराम करने को कहा।

दूसरे दिन सवेरे मल्लिका कापालिक का वेष धर कर जब नगर में पहुँची, तब वहाँ पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। मल्लिका ने भीड़ में से एक व्यक्ति से पूछा–"बात क्या है!" उसने उत्तर दिया–"यहाँ पर बुद्धवर्मा नामक एक व्यापारी है, उसके एक कुबड़ा पुत्र है। एक ब्राह्मण युवक ने एक सुंदर कन्या के साथ विवाह किया और उसे इस कुबड़े को सौंप दिया। इस पर वह कन्या भाग गयी।"

कुमारी मृदुला

"क्या तुम उस कमबख्त ब्राह्मण युवक का घर दिखा सकते हो?" मल्लिका ने उस व्यक्ति से पूछा। वह व्यक्ति मल्लिका को यज्ञगुप्त के घर पर पहुँचा कर अपने रास्ते चला गया।

यज्ञगुप्त का मकान बहुत ही साधारण था। मकान के एक ओर अग्निहोत्र था। यज्ञगुप्त शिष्यों को पढ़ रहा था।

मल्लिका वहाँ पहुँच कर बोली–"आप कौन-सा ग्रन्थ पढ़ा रहे हैं?"

"मनुधर्म शास्त्र में वर्णित वर्णाश्रम धर्मों की व्याख्या सुना रहा हूँ।" यज्ञगुप्त ने कहा।

"यह झूठ है। वर्णांतर विवाह करके अपनी पत्नी को एक कुबड़े के हाथ सौंपनेवाले तुम धर्मशास्त्र कैसे पढ़ा रहे हो?" मल्लिका ने स्पष्ट शब्दों में पूछा।

"पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र का धर्म है! रामचन्द्र ने क्या किया है?" यज्ञगुप्त ने कहा।

"तुम अवतार पुरुष रामचन्द्र के साथ अपनी तुलना करते हो! अच्छी बात है! तुमने अपने पिता के आदेशानुसार विवाह किया। पर किस कारण से तुमने उसे त्याग दिया?" मल्लिका ने फिर पूछा।

यज्ञगुप्त इस सवाल का कोई उत्तर दे नहीं पाया। मल्लिका दुपहर तक वहीं बैठी रही, तब भीख मांगने के बहाने वहाँ से चली गयी और बूढ़ी ब्राह्मणी के घर पहुँची। उस दिन से लेकर लगातार
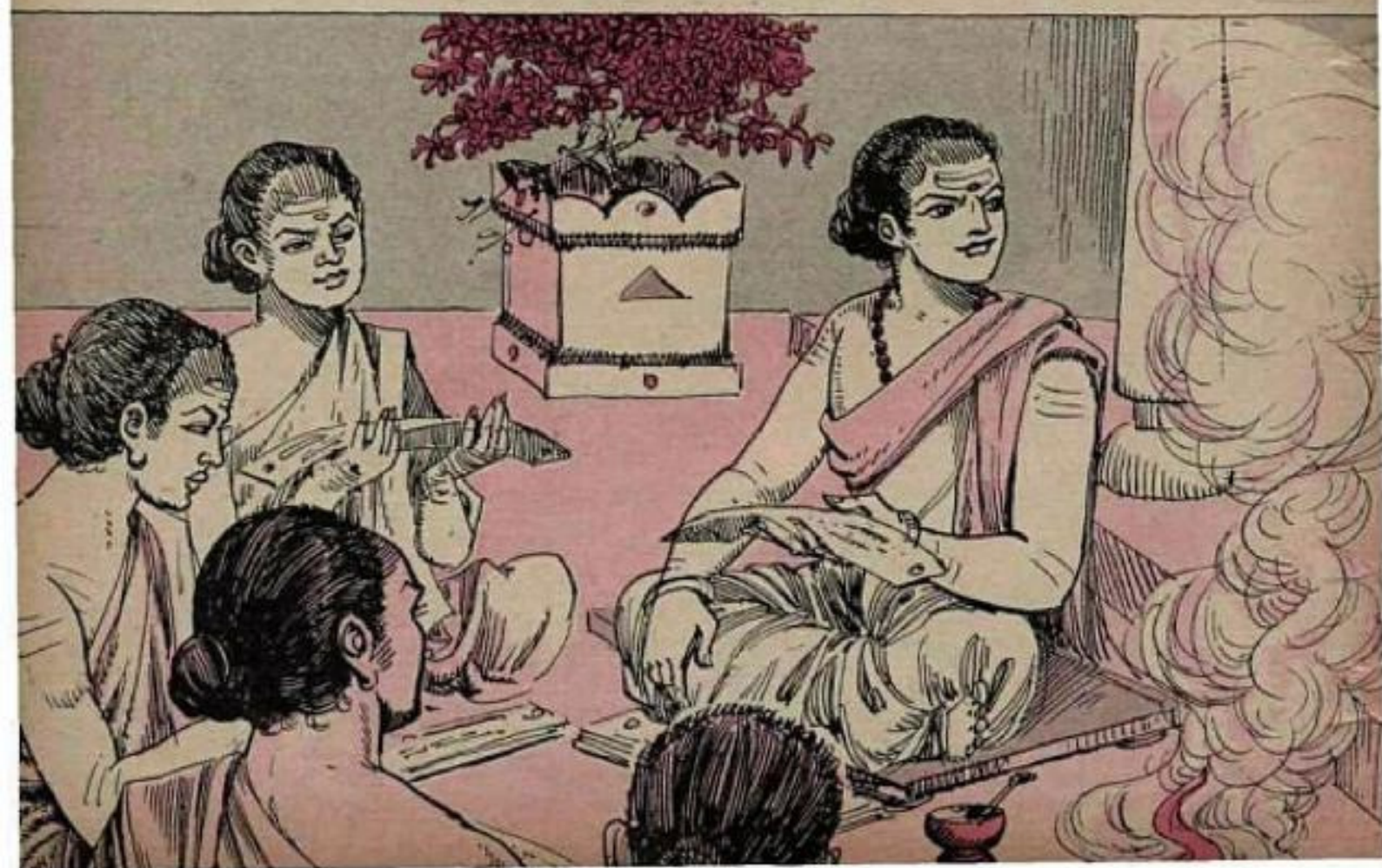
मल्लिका अपने दिन का समय यज्ञगुप्त के घर में तथा रात का समय ब्राह्मणी के घर बिताने लगी।

मल्लिका ने भांप लिया कि यज्ञगुप्त अपनी गरीबी की वजह से ही यह अन्याय पूर्ण कार्य कर बैठा है, इसलिए उसने निर्णय कर लिया कि धन का लोभ देकर उसे अपनी ओर आकृष्ट करना चाहिये। उसने अपने मोतियों के हार को बेचा, उस धन को गाँव के बाहर एक सुरक्षित प्रदेश में गाड़ दिया। इसके उपरांत उसने यज्ञगुप्त से कहा–" मुझ जैसे लोगों को एक स्थान पर पांच दिन से अधिक नहीं ठहरना है, पर तुम्हारे प्रति मेरे मन में जो वात्सल्य था, उससे प्रेरित होकर मैं पांच दिन से अधिक यहाँ पर रहा। अब मुझे काशी की यात्रा पर जाना है। मेरे पास महाकाल मंत्रवाला ग्रन्थ है। उसकी मदद से पृथ्वी में गढ़े खज़ाने का पता चल जाता है। मैंने हाल ही में एक जगह एक खज़ाने का पता लगाया है, तुम यदि वह खज़ाना चाहते हो तो मेरे साथ चल कर ले सकते हो।"

इस पर यज्ञगुप्त अपने एक-दो विश्वास पात्र शिष्यों को साथ ले उसके पीछ गया और उन तांबे के बर्तनों को अपने घर ले आया। उसने बड़ी प्रसन्नता के साथ यह समाचार अपने पिता को दिया और यह भी बताया कि कापालिक के पास महाकाल नामक एक ग्रन्थ भी है।

"अरे, यह वेद किसलिए? छोड़ दो! उस कापालिक के आश्रम में जाकर महाकाल मंत्र सीख लो। उस ग्रन्थ के प्राप्त होने तक उसकी सेवा करो।" यज्ञगुप्त के पिता ने उसे समझाया।

यज्ञगुप्त ने देखा कि कापालिक यात्रा की तैयारी कर रहा है, इस पर उसने कहा—"स्वामिन, मुझ जैसे पापी के लिए तीर्थाटन से बढ़कर पुण्य का कार्य कौन सा होगा?"

मल्लिका ने ऐसा अभिनय किया मानों, वह यज्ञगुप्त को अपने साथ चलने से मना करती हो, आखिर उसने मान लिया। दोनों काशी पहुँचे। वहाँ कुछ दिन तक रहने के पश्चात नैमिशारण्य से होकर गंगा द्वार तक पहुँचे। वहाँ से कुरु, पुष्कर, महालय इत्यादि पुण्यतीर्थों का सेवनकर उज्जयिनी के लिए चल पड़े।

मल्लिका ने यज्ञगुप्त से कहा—"तुम्हारा उज्जयिनी में आना उचित न होगा। वहाँ पर तुमने महान अपराध किया है। उज्जयिनी के निवासी तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे। इसलिए तुम घर चले जाओ।"

मगर यज्ञगुप्त ने कहा—"स्वामिन, कहीं शिष्य गुरु को छोड़ सकता है!"

दोनों उज्जयिनी पहुँचे। तब मल्लिका ने यज्ञगुप्त को भद्रवट नामक एक प्रदेश में ठहराकर कहा—"मैं किसी खजाने का पता लगने तक लौटूंगा नहीं, मेरे लौटने में विलंब हो जाय तो घबराओ मत।"

इसके बाद मल्लिका शिप्रा नदी के तट पर पहुँची, स्नान करके कापालिनी के वस्त्र धारण किये, अपने पिता के घर जाकर भिक्षा माँगी। भिक्षा देने के लिए मल्लिका की एक परिचारिका बाहर आयी, उसने मल्लिका को पहचान लिया। अपनी मालिकिन के पास जाकर बोली—"मालिकिन, हमारा घर तबाह हो गया है! आपकी बेटी कापालिनी के वेष में द्वार पर खड़ी है। जाकर देख लीजिये।"

मल्लिका की माता ने बाहर आकर कापालिनी के वस्त्रों को फाड़ डाला। अपनी बेटी को भीतर ले जाकर स्नान कराया, तब पूछा–"बेटी, यह सब क्या है?"

"माँ, तुम समझती हो, मैं सचमुच कापालिनी बन गयी हूँ? पिताजी को बुलाओ, मैं अपनी सारी कहानी सुना देती हूँ।" मल्लिका ने उत्तर दिया।

सागरदत्त को देख मल्लिका ने कहा–"पिताजी, आपके दामाद भद्रवट में हैं। उन्हें लिवा लाने भाइयों को भेज दीजिये।"

यज्ञगुप्त के पास जाकर उसके सालों ने कहा–"अरे दुष्ट, तुम हमारे हाथ लग गये, चलो, राजा तुम्हें बुलाते हैं।"

यज्ञगुप्त ने सोचा कि उसे मृत्युदण्ड निश्चित हैं, यह सोचकर उसने निवेदन किया–"मेरे मित्र कापालिक के लौटने तक तुम लोग ठहर जाओ।"

मल्लिका के भाइयों ने हँसकर कहा–"तुम्हारा मित्र अब कहाँ है? उसे जहाँ पहुँचना था, पहुँच गया है। उसीने तुम्हें पकड़ा दिया है। तुम जैसे दुष्टों के साथ किसी की मैत्री क़ायम रह सकती है?" इन शब्दों के साथ उसे अपने घर ले गये।

अपने दामाद को देखते ही सागरदत्त ने बड़े ही वात्सल्य के साथ उसका आलिंगन किया। सबने उसे घेर लिया।

पति के वास्ते मल्लिका ने जो कष्ट झेले, उनकी यादकर यज्ञगुप्त ने सोचा–"कहा जाता है कि औरत की बुद्धि संकुचित होतीहै, मगर यह सफ़ेद झूठ है। मूर्ख पांडव विराट के यहाँ अज्ञातवास करते रहे तो यह द्रौपदी की बुद्धिमत्ता का कारण ही हो सकता है।"

धीरे धीरे मल्लिका का वृत्तांत उस देश के राजा को मालूम हो गया। उसने मल्लिका तथा यज्ञगुप्त को बुला भेजा। उन्हें धन तथा अग्रहार देकर कहा–"बेटी, तुम्हारे पति को ब्राह्मणों के आचारों का पालन करने में तुम्हें मदद देनी है।"

इसके बाद यज्ञगुप्त अपनी पत्नी के साथ कई वर्षों तक सुखपूर्वक जिंदगी बिताते हुए यश प्राप्त कर सका।

उपाय

एक गाँव में एक गृहस्थ था। पढ़ा-लिखा तो न था, मगर अक्लमंद था। एक बार उसे दस रुपये की जरूरत पड़ी। उसे पाने के लिए उसने बड़ी कोशिश की, पर न मिला। आख़िर एक उपाय सोचा।

शहर में उसके परिचित एक वकील था। उसने वकील के पास जाकर कहा–"वकील साहब, आप तो पढ़े-लिखे हैं और अक्लमंद भी हैं। मैं अपढ़ गँवार हूँ। मैं आपसे एक सवाल पूछता हूँ. अगर आप उसका जवाब न दे सके तो मुझे बीस रुपये दीजिये। आप भी मुझसे एक सवाल पूछिये, मैं यदि उसका जवाब न दे सकूँगा तो आप को दस रुपये दूँगा। मैं गरीब जो हूँ।"

इस पर वकील ने बड़ी खुशी से मान लिया।

"तीन पैर और दो नाकोंवाला पक्षी कौन है?" गृहस्थ ने वकील से पूछा।

वकील जवाब न दे पाया। हार मान कर गृहस्थ को बीस रुपये देते हुए कहा–"मैं तुमसे वही सवाल पूछता हूँ, जवाब दो।"

"मैं हार गया हूँ।" ये शब्द कहते गृहस्थ ने वकील के हाथ दस रुपये दिये, बाकी दस जेब डाल अपने रास्ते चलता बना।

भोला किशन

एक गाँव में जानकी नामक एक विधवा थी। उसके किशन नामक एक भोला भाला लड़का था। उसकी माँ ने बड़ी तक़लीफ़ उठा कर उसे पाल-पोस कर बड़ा किया।

एक दिन जानकी ने अपने बेटे किशन से कहा–"बेटा, तुम कहीं जाकर कोई काम ढूंढ़ लो, चार पैसे कमाओ।"

"अच्छी बात है, मां! बस्ती में जाकर कोई काम ढूंढ़ लूंगा। रोटियाँ बना कर दे दो।" किशन ने जवाब दिया।

जानकी ने रोटियाँ बना कर किशन के हाथ दीं। किशन रोटियाँ लेकर चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर उसे थकावट महसूस हुई और भूख भी लगी। इसलिए वह एक तालाब के किनारे पेड़ के नीचे बैठ गया। रोटी खा कर पानी पिया। खाना खाते ही उसे नींद आ गयी, लेट कर सो गया।

नींद से जागने पर उसने देखा, शाम हो गयी थी। तभी उसे पेड़ पर एक गिरगिट दिखाई दिया। गिरगिट अपना सर ऊपर और नीचे हिला रहा है। उसने सोचा कि गिरगिट उससे पूछ रहा है कि तुम्हें क्या चाहिए?

किशन ने कहा–"मुझे काम चाहिए।" गिरगिट ने फिर अपना सर हिलाया।

"ओह, तुम्हीं मुझे काम दोगे? तब तो मैं कल से काम पर लग जाऊँगा। आज शाम हो गयी है।" गिरगिट से ये बातें कहकर किशन अपने घर चला गया और सारी बातें अपनी माँ को सुनायीं।

किशन रोज रोटियाँ बाँध कर सवेरे घर से निकल पड़ता और तालाब के पास रोटी खाकर पानी पीता और सो जाता। इस प्रकार एक महीना बीत गया। "बेटा, क्या तुम्हारे मालिक ने तुम्हें महीने की

मधुसूदन राय

तनख्वाह नहीं दी?" माँ ने किशन से पूछा।

"आज तनख्वाह मांग कर लेते आऊँगा, माँ!" किशन ने जवाब दिया।

दूसरे दिन वह तालाब के किनारे पहुँचा, खाना खाकर पानी पिया, नींद आ रही थी, फिर भी वह गिरगिट का इंतजार करने लगा। बड़ी देर बाद उसे गिरगिट दिखाई दिया। वह पेड़ की जड़ के पास के एक छेद में से बाहर निकलने लगा। तब किशन ने उससे पूछा-"मैं एक महीने से तुम्हारे यहाँ काम कर रहा हूँ। इसलिए मुझे एक महीने की तनख्वाह दो।" गिरगिट ने अपना सर ऊपर-नीचे हिलाया।

"कल दोगे? अच्छी बात है!" किशन ने गिरगिट की भाषा का अर्थ लगाया और घर लौटकर अपनी माँ से कहा-"माँ, तनख्वाह कल मिल जायगी!" माँ ने सोचा कि बेटे का कहना सच है।

दूसरे दिन किशन ने गिरगिट को देखते ही पूछा-"क्या तुम मेरी तनख्वाह लाये हो?" गिरगिट ने रोज़ की भांति अपना सर ऊपर नीचे हिलाया। इसे देख किशन को बड़ा क्रोध आया और उसने उस पर एक पत्थर फेंका। गिरगिट घबराकर पेड़ के नीचे के बिल में घुस गया।

किशन घर जाकर कुदाल ले आया, बिल को खोदकर चौड़ा बनाया, मगर गिरगिट का कहीं पता न लगा। किशन इस आशा से खोदता गया कि गिरगिट और भीतर चला गया होगा। आखिर उसे सोने की अशर्फ़ियों का घड़ा मिला।

घड़े में से किशन ने अशर्फ़ियाँ निकालीं और अपनी दोनों जेबें भर लीं। बाक़ी अशर्फ़ियों को वहीं छोड़ किशन घर चला गया। माँ ने उससे पूछा-"यह धन तुम्हें कहाँ मिला?" किशन ने सारी बातें उसे समझायीं। अंधेरा फैलने पर जानकी अपने बेटे को साथ लेकर तालाब के पास गयी और अशर्फ़ियोंवाले घड़े को घर ले आयी। इसके बाद भोले किशन को काम की खोज़ करनी नहीं पड़ी।

धर्मदाता

पुराने जमाने की बात है। बग्दाद नगर में एक लखपति रहा करता था। उसने अनेक दान-धर्म करके धर्मदाता नाम से यश प्राप्त किया। उसी नगर में एक और लखपति था। वह बड़ा लोभी था। उसने कभी किसी को एक कौड़ी का भी दान नहीं किया था। इसलिए लोग जहाँ धर्मदाता की तारीफ़ करते थे, वहाँ उस लोभी की निंदा भी किया करते थे।

लोभी ने सोचा कि उसे जो यह अपयश प्राप्त हुआ है, उसे दूर करना है। उसने अपने एक विश्वासपात्र नौकर अब्दुल रजाक से कोई उपाय पूछा। अब्दुल रजाक ने यों सलाह दी–"लोगों के द्वारा धर्मदाता कहलाना ऐसा सरल काम नहीं है। इसके लिए काफ़ी धन खर्च करना पड़ेगा। इससे आसान तरीक़ा यह है कि धर्मदाता के रूप में यश पाये हुए व्यक्ति को धोखा देकर उसके जरिये यश फैलवाना आसान है। उनको एक दिन हमारे घर अतिथि के रूप में निमंत्रण दीजिये। मैं तरह-तरह के वेष धारणकर भिखारी के रूप में आपके पास आऊँगा। आप हर बार मुझे सौ-सौ दीनार दान देते जाइये। इससे प्रभावित होकर धर्मदाता सब कहीं आपकी दानशीलता की तारीफ़ करेंगे। इस तरह आपका यश फैल जायगा।"

"तुम्हारी यह सलाह बड़ी अच्छी है। तुम कल ही उनके घर जाकर हमारे घर निमंत्रण दो।" लोभी ने कहा।

अब्दुल रजाक ने धर्मदाता के घर जाकर अपने मालिक का नाम बताया और कहा–"हुजूर, आप कल सुबह ही हमारे मालिक के घर पधारकर दावत का सेवन कीजिये। मेरे मालिक ने आपको निमंत्रण देने मुझे भेजा है।"

विमला गर्ग

"तुम्हारे मालिक तो किसी को एक कौड़ी भी दान नहीं देते। मुझे दावत के लिए निमंत्रण देना आश्चर्य की बात मालूम होती है।" धर्मदाना ने कहा।

"हुजूर! मेरे मालिक के संबंध में लोग जो बातें कहते हैं, उन पर विश्वास न कीजिये। वास्तव में वे एक बहुत बड़े दाता हैं। मगर वे गुप्त दान करते हैं, इसलिए तीसरा व्यक्ति उनके दानों के बारें में बिलकुल नहीं जानता। कल आप ही खुद अपनी आँखों से देखेंगे।" अब्दुल रजाक ने बताया।

"अच्छी बात है, तुम अपने मालिक से कह दो कि मैं कल सुबह वहाँ पर पहुँच जाऊँगा।" ये शब्द कहकर धर्मदाता ने अब्दुल रजाक को भेज दिया। इसके बाद उसने अपने एक विश्वास पात्र नौकर अजीज को बुलाकर थोड़ी देर बात की।

दूसरे दिन सवेरे धर्मदाता लोभी के घर आया। लोभी ने आदर के साथ उसका स्वागत किया, एक आसन पर बिठाकर कहा-"देखते हैं न, मेरे दान-धर्मों का परिचय सब को प्राप्त हो, यह मुझे कदापि पसंद नहीं है। मुझे सिर्फ़ दान से मतलब है, यश से नहीं।"

वे दोनों बात कर ही रहे थे, तभी अब्दुल रजाक चुपके से खिसक गया। वह एक अंधे भिखारी का वेष धरकर अपने मालिक के घर आया। उसने मालिक से भीख मांगी। लोभी ने थैली में से सौ दीनार निकाल कर भिखारी के हाथ दिया।

अंधे भिखारी के चले जाने के थोड़ी देर बाद एक बूढ़ा आया। लोभी ने उसे भी सौ दीनार दे दिये। दुपहर के अन्दर क्रमशः एक फ़कीर, एक गूँगा, एक लंगड़ा, इस प्रकार दस याचक आये। लोभी ने हर एक को सौ सौ दीनार दे दिये। वह मन ही मन अपने नौकर की चालाकी की तारीफ़ करने लगा कि वह किस प्रकार तरह-तरह के वेष धारण कर आ सका।

धर्मदाता ने लोभी के व्यवहार को देख उससे कहा–"मैंने तुम जैसे दाता को कहीं नहीं देखा। मेरे देखते-देखते तुमने एक हज़ार दीनार दान दिये। कैसे आश्चर्य की बात है!"

"आप तो इस बात पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हैं, मगर मेरे लिए यह मामूली सी बात है!" लोभी ने कहा।

दुपहर तक अब्दुल रजाक अपना साधारण वेश धरकर घर के भीतर चला गया। उसके पीछे लोभी ने भी घर के अन्दर जाकर कहा–"तुमने तरह-तरह के वेष-धारण में कमाल किया है, मेरे सब दीनार निकालो।"

"लीजिये, ये तीन सौ दीनार!" इन शब्दों के साथ रजाक ने तीन सौ दीनार अपने मालिक के हाथ दिये।

"अरे, तीन सौ दीनार क्या, मैंने एक हज़ार दीनार जो दिये हैं!" लोभी ने घबरा कर पूछा।

"एक हज़ार दीनार कैसे? मैं तो तीन बार वेष बदल कर आया था। आपने भी मुझे तीन दफ़े तीन सौ दीनार दिये हैं।" अब्दुल रजाक ने जवाब दिया।

"तुम तीन ही बार आये तो बाक़ी सात बार कौन आये थे?" लोभी ने गुस्से में आकर पूछा।

"सात बार शायद मेरे नौकर अजीज़ आया होगा।" धर्मदाता का कंठ सुनाई दिया।

दोनों ने मुड़कर देखा तो धर्मदाता दर्वाजे पर खड़ा हुआ था। उसने लोभी के पीछे आकर उनकी बातचीत सुन ली थी। लोभी का चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ गया।

"अजीज़, थोड़ी देर में आ जायगा। वह भी विश्वास पात्र नौकर है। आप का धन कहीं नहीं जायगा।" धर्मदाता ने लोभी को हिम्मत बंधायी।

इतने में अजीज़ ने आकर सात सौ दीनार लोभी के हाथ दिये। आश्चर्य और अपमान के साथ लोभी का चेहरा एकदम स्याह पड़ गया था, इसलिए उसके मुंह से बात तक न निकली।

शराबी की बकवास

एक गाँव में एक लकड़हारा था। वह खूब शराब पीता था। एक दिन दुपहर के समय वह जंगल में लकडी काट रहा था, उसे बड़ी प्यास लगी। बड़ी देर तक खोज करने पर उसे पत्थरों के टीले के बीच एक तालाब दिखाई दिया।

लकड़हारे ने अपनी प्यास बुझायी और सोचा–"ओह, इस तालाब का सारा पानी शराब बन जाता और टीले के पत्थर सब मांस के टुकड़े बन जाते तो मैं कस कर शराब पीता, मांस के टुकड़े खाकर यहीं पर अपना सर फोड़ कर मर जाता।"

वनदेवी ने लकड़हारे की बातें सुनीं, उसने उसकी सचाई की जांच करने के ख़्याल से तालाब के जल को शराब तथा टीले के पत्थरों को मांस के टुकड़ों में बदल दिया। लकड़हारे ने भरपेट मांस खाया, खूब शराब पी और वहीं पर लेट कर सो गया।

संध्या के समय वह नींद से जाग उठा और अपने घर की ओर चल पड़ा, तब वनदेवी ने प्रत्यक्ष होकर पूछा–"तुम्हारी इच्छा की पूर्ति हो गयी है, अब तुम अपना सर फोड़ कर क्यों नहीं मरते?"

"वाह देवीजी, आप भी कैसी भोली भाली हैं? शराबी की बकवास पर आप भी यक़ीन करती हैं?" ये शब्द कहते शराबी अपने घर की ओर चल पड़ा।

कुशल-प्रश्न

एक गाँव में एक अमीर था। उसके शिवप्रसाद नामक एक पुत्र था। उसने एक गरीब लड़की से प्यार किया और उसके साथ शादी भी कर ली। पर सास-ससुर अपनी बहू विशालाक्षी के प्रति उपेक्षा का भाव रखते थे।

विशालाक्षी ने जब तब अपनी सास और ससुर के यह कहते सुना कि यह तो हमारी दरिद्र बहू है! फिर भी वह मौन रही, उसे अपने पति शिवप्रसाद के द्वारा मायके के कुशल-समाचार मिल जाते थे। शिवप्रसाद ने एक बार बताया कि विशालाक्षी का पिता उसे देखना चाहता है।

विशालाक्षी ने अपने पति से कहा– "तुम पिताजी के यहाँ अच्छे वस्त्र भेज दो, ताकि वे उन्हें पहनकर ही आवे।"

विशालाक्षी का पिता कुछ दिन बाद अपने दामाद के द्वारा भेजे गये वस्त्र पहनकर बेटी को देखने आया। शिवप्रसाद के पिता ने अपने समधी का आदर-सत्कार नहीं किया, घर के भीतर जाकर अपनी बहू विशालाक्षी से यही कहा–"तुम्हारा पिता आया है, बरामदे में है।"

विशालाक्षी ने बरामदे में जाकर अपने पिता से साधारण कुशल-प्रश्न पूछे। वह जानती थी कि उसके पिता के साथ उसकी जो बातचीत हो रही है, उसे उसके सास-ससुर सुन रहे हैं। इसलिए उसने बड़ी युक्ति के साथ प्रश्न पूछे–"पिताजी हमारी तिजोरी हमेशा आवाज़ कर रही है न?"

विशालाक्षी के पिता का घर क्या था, झोंपड़ी थी। छत की पत्तियाँ हवा के कारण हिलते आवाज़ करती थीं।

"इसमें क्या कमी है, बेटी! हमेशा की भांति आवाज तो करती ही हैं।" पिता ने कहा।

"खेतों में धान खूब झर रहे हैं न? उन्हें सावधानी से घर ला रहे हैं न?" विशालाक्षी ने पूछा। बेचारे विशालाक्षी के घरवाले धान के बीज चुनकर खाया करते थे।

"इसमें क्या कमी है, बेटी? सब ठीक से चल रहा है।" पिता ने जवाब दिया।

"कोने में पड़े दांत सब ठीक हैं न! उनमें नये दांत नहीं जुड़े हैं न?" बेटी ने फिर पूछा। वे दांत हाथी के दांत नहीं थे, बल्कि बाँस थे।

"नये जोड़ने की बात सोच रहा हूँ।" पिता ने उत्तर दिया।

"आकाश दीप वैसे ही हैं न?" बेटी ने पूछा। विशालाक्षी के मायके की झोंपड़ी में छेद था, उसमें से सूर्य और चन्द्रमा दिखाई देते थे, इसलिए वे उसे आकाश दीप कहते थे।

"वैसे ही है, बेटी! अभी तक हमने उसे निकाला नहीं।" पिता ने कहा।

"माँ, भाई और बहनों के हाथों में माणिक ज्यों के त्यों हैं न?" बेटी ने पूछा।

"हाँ, बेटी, ज्यों के त्यों हैं।" पिता ने उत्तर दिया। विशालाक्षी का संकेत था कि काम करने से हाथों में पड़नेवाले छाले! अपने पिता के उत्तर सुनकर विशालाक्षी को बड़ा दुख हुआ, क्योंकि उसके मायके की हालत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। मगर उनकी बातचीत सुननेवाले सास-ससुर को लगा कि उनका समधी गरीब नहीं, बल्कि बड़ा धनी है।

तुरंत सास बाहर आयी और अपनी बहू से बोली–"तुम्हारे पिता के आये कितनी देरी हुई? तुमने उनको बातों में लगा रखा, हाथ-मुँह धोने पानी तक नहीं दिया? जाओ, नाश्ता-पानी लेते आओ।"

विशालाक्षी की चाल चल गयी थी। उसके सास-ससुर ने उसके पिता का न केवल अच्छा सत्कार किया, बल्कि लौटते वक़्त घर-भर के लोगों को अच्छे वस्त्र देकर भेज दिया। शिवप्रसाद ने गुप्त रूप से धन भी देकर सादर विदा किया।

नींद की दवा

पुराने जमाने की बात है। एक देश का राजा बड़ा संपन्न था। उसे किसी भी प्रकार के ऐश्वर्य की कमी न थी। राजमहल के उद्यान में साल-भर सुंदर फूल खिला करते थे। उद्यान के बाहर राजा का अपना निजी जंगल था जिसमें राजा को छोड़ कोई शिकार न खेलता था।

राजा के लिए सभी प्रकार के सुख प्राप्त थे, मगर उसे सिर्फ़ निद्रा के सुख की कमी बहुत खटकती थी। राजा ने सोचा कि जिसे निद्रा का सुख नहीं है, उसे कोई सुख नहीं। नींद का न आना भी एक प्रकार की भयंकर बीमारी है। इस बीमारी के लिए उसने अनेक प्रकार के इलाज करवाये, मगर कोई फ़ायदा न रहा। दूर देशों के अनेक वैद्यों ने आकर इलाज किये, फिर भी कोई लाभ न पहुँचा।

एक दिन रात को राजा नींद न आने से सवेरे तक करावटें बदलता रहा, आख़िर वह ज़िंदगी से ऊब भी गया। सवेरा होते ही राजा ने एक साधारण व्यक्ति की पोशाकें पहनीं, राजमहल में किसी से कहे बिना जंगल की ओर चल पड़ा।

जंगल में चलते राजा ने अनुभव किया, वहाँ पर ठण्डक है और आराम भी है। उसके मन की विकलता जाती रही और वह शांति का अनुभव करने लगा।

थोड़ी दूर और चलने पर उसे कोई आवाज सुनायी दी। वह खीझ उठा और उस दिशा में चल पड़ा जिस ओर से आवाज़ आ रही थी। एक जगह एक आदमी अपने हाथ में कुल्हाड़ी लिये पेड़ काट रहा था।

"बेचारा कैसी तक़लीफ़ें झेलते यह आदमी काम कर रहा है, धूप भी

जानकी प्रसाद

कड़ी है।" राजा ने अपने मन में सोचा।

थोड़ी देर बाद लकड़हारे ने कुल्हाड़ी नीचे डाल दी, अपने मैले कपड़े से पसीना पोंछा। जमीन पर चित लेट कर कह उठा–'उफ़!' इसके बाद उस आदमी ने करवट लेते हुए राजा को देखा। वह झट उठकर बैठ गया।

राजा ने लकड़हारे की ओर दया भरी दृष्टि से देखा और मुस्कुराते हुए बोला– "तुम शायद थक गये होगे। धूप भी कड़ी है। थोड़ी देर आराम करो।"

"साहब, मैंने पहले आपको देख इस जंगल का निरीक्षक समझा और डर भी गया। आपकी बातों को सुनने पर मुझे लगता है कि आपको शरीरिक श्रम की आदत नहीं है।" लकड़हारे ने कहा।

"तुम ठीक कहते हो।" राजा ने उत्तर दिया।

"आपके वस्त्र सफ़ेद हैं। आपकी हथेलियां नरम हैं। मेरी हथेलियों को देखिये, इनमें कैसे छाले पड़ गये हैं। शायद आप दर्जी का काम करते होंगे।" लकड़हारे ने कहा।

"मैं दर्जी नहीं हूं, लेकिन यह तो बताओ कि इतनी मेहनत करने के बाद तुम्हें नींद कैसे आती है?" राजा ने पूछा।

लकड़हारे को यह सवाल पागल का सा मालूम हुआ। वह जोर से हंस पड़ा और बोला–"मैं घंटों सो सकता हूँ, खटमल के काटने पर भी मुझे पता नहीं चलता।"

"मैं इन बातों पर यक़ीन नहीं कर सकता।" राजा ने कहा।

"आप किस पर यक़ीन नहीं करते? मेरे पास धन होता तो एक सप्ताह लगातार सो जाता। लेकिन मैं गरीब आदमी हूँ। काम न करने पर मेरा पेट नहीं भरता। मैं मेहनत न करूँ तो मेरी औरत और बच्चे भूख के मारे मर जायेंगे।" लकड़हारे ने जवाब दिया।

"क्या तुमने नही सुना कि हमारे राजा को नींद नहीं आती ?" राजा ने पूछा ।

'यही बात मुझे आश्चर्य की मालूम होती है । उन्हें तो मेरे जैसे काम करने की ज़रूरत नहीं है । सोने के लिए उन्हें मुलायम बिस्तर हैं । न मालूम क्यों उन्हें नींद नहीं आती ?" लकड़हारे ने कहा ।

राजा मौन रहा । लकड़हारा उठते हुए बोला—"मैं बैठ कर बात नहीं कर सकता । निरीक्षक ने देख लिया तो मुझे काम से निकाल देंगे ।" ये शब्द कहते फिर कुल्हाड़ी ले पेड़ काटने लगा ।

लकडहारे को लकड़ी काटते राजा ने आश्चर्य के साथ देखा और मन में सोचा—"राजा होकर भी मैं सो नहीं पाता हूँ । यह लकड़हारा कैसे सो पाता है ?"

थोडी देर बाद राजा ने लकड़हारे से कहा—"तुम उस पेड़ की छाया में लेट कर सो जाओ । तुम्हारे सोते मैं देखना चाहता हूँ ।"

"वाह! मुझे तो शाम के अन्दर यह काम पूरा करना है ।" लकड़हारे ने जवाब दिया ।

"इसकी चिंता तुम मत करो । मैं तुम्हारा काम कर देता हूँ ।" ये शब्द कहते राजा ने लकड़हारे के हाथ से कुल्हाड़ी ले ली ।

लकड़हारे ने राजा की ओर शंका भरी दृष्टि से देखा, जाकर पेड़ के नीचे लेट गया और वह दूसरे ही क्षण सो गया ।

"कैसे अचरज की बात है! बिस्तर नहीं, तकिया नहीं, कम से कम चटाई तक नहीं । यह कैसे सो पाता है ?" राजा आश्चर्य में आ गया ।

मगर राजा को उसका काम करना था, इसलिए कुल्हाडी लेकर वह पेड काटने लगा । जल्द ही उसके बदन से पसीना छूटा, इसलिए उसे कुर्ता खोलना पड़ा ।

जैसे-तैसे पेड़ तो कट गया । मगर राजा के हाथों में छाले पड गये । कमर और हाथ दुखने लगे । राजा लकड़हारे की

बगल में जमीन पर ही लेट गया। कुछ ही क्षणों में उसकी आँखें भारी मालूम हुईं, वह जल्द ही गहरी नींद में डूब गया।

शाम हो गयी। निरीक्षक हर एक मजदूर के काम की जांच करते वहाँ पर आ पहुँचा। उसने देखा कि मजदूर एक दूसरे आदमी की बगल में लेट कर सो रहा है, वह नाराज़ हुआ और उसे एक लात मारते हुए चिल्ला पड़ा–"अबे गधे, उठो।"

राजा ने आँखें खोल कर देखा और कहा–"तुम चिल्लाते क्यों हो? बेचारा वह थक गया है, उसे सोने दो।"

"तुम कौन हो, मुझे समझाने वाले? मैं इस जंगल का निरीक्षक हूँ।" उस अफ़सर ने घमण्ड में आकर जवाब दिया।

राजा को बड़ा क्रोध आया। उसने दांत मींचते हुए कहा–"यदि तुमने उसे जगाया तो मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा।"

निरीक्षक घबरा उठा। पीछे की ओर हठते हुए धमकी दी–"देख लो, मैं फिर लौट कर तुम्हारी खबर लूँगा।"

इस बीच में राजमहल में हलचल मचगई। राजा का पता न पाकर राज कर्मचारी उसकी खोज करने लगे। उनमें से कुछ लोग राजा को ढूंढ़ते जंगल में आ पहुँचे। राजा को डांटनेवाले निरीक्षक को देख उन लोगों ने पूछा–"साहब, क्या तुमने राजा को देखा?"

"राजा की बात तो मैं नहीं जानता, लेकिन यहाँ पर राजाओं का राजा आ गया है, लो देख लो, उसे।" इन शब्दों के साथ वेश बदले हुए राजा की ओर निरीक्षक ने उंगली दिखाई।

राजकर्मचारियों ने राजा को पहचान लिया और कहा–"महाराज, हम आज सुबह से आप को ढूंढ रहे हैं।"

राजा ने उन्हें लकड़हारे को दिखा कर आदेश दिया–"तुम लोग इस आदमी को राजमहल में ले जाओ और एक मखमली गद्दे पर इसे लिटा दो। जब तक न जागेगा, तब तक इसे सोने दो। जागने पर पेट-भर खाना खिलाओ। इसने मेरी बीमारी का इलाज बताया है।"

दूसरे दिन सवेरे कीचक ने राजमहल में आकर द्रौपदी को देखा और कहा–"तुमने मेरा पराक्रम देखा ही है। मैंने राजसभा में तुम्हें लात मारी तो एक भी व्यक्ति मेरा विरोध न कर सका। विराट तो नाम के वास्ते राजा है। लेकिन सारी सेनाएं मेरे अधीन हैं। मैं ही वास्तव में सच्चा राजा हूँ। मेरी सेवाएं लेकर मुझे धन्य बनाओ। मैं तुम्हें रोज़ सौ स्वर्ण मुद्राएं दूंगा। सैकड़ों दास और दासियां दूंगा। बढ़िया रथ भी दूंगा।" इन शब्दों के साथ वह फिर गिड़गिड़ाने लगा।

"तुम सचमुच मुझे चाहते हो तो तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना होगा; हमारा रहस्य राजसभा में या तुम्हारे भाइयों तक को मालूम न हो। यह रहस्य प्रकट हो गया तो गंधर्वों तक को मालूम हो जायगा। मैं इसीलिए डरती हूँ। तुम इस शर्त को मान जाओ तो मैं तुम्हारी हो सकती हूँ।" द्रौपदी ने कहा।

"मैं सब की आंख बचाकर तुम्हारे कमरे में आ जाता हूं। गंधर्वों को बिलकुल मालूम होने न दूंगा।" कीचक ने कहा।

इस पर द्रौपदी ने कहा–"रात के वक़्त नर्तनशाला में कोई नहीं रहता। अंधेरा फैल जाने के बाद तुम वहां पर आ जाओ। अगर हम वहां पर मिलें तो किसी को, यहां तक कि गंधर्वों को भी मालूम न होगा।"

इसके बाद मौक़ा पाकर द्रौपदी भीम से मिली और उसने कीचक के साथ जो
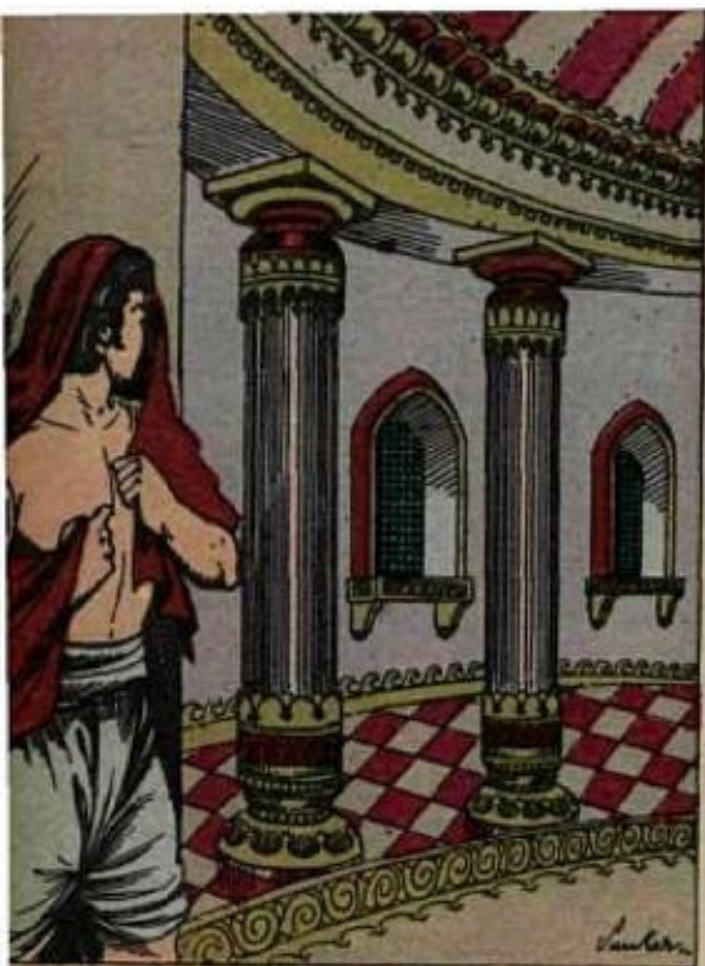
इंतज़ाम किया था, उसका परिचय भीम को दिया ।

कीचक मूर्ख था । सैरंध्री के स्वागत को उसने मृत्यु की पुकार नहीं माना । वह यह सोच कर अपना समय खुशी से बिताने लगा कि द्रौपदी उसकी अपनी होने जा रही है ।

इस बीच भीम के मन में कीचक का वध करने के लिए उत्साह उमड़ता ही गया । उसने उत्तेजित हो द्रौपदी से कहा–"गुप्त रूप से संभव न हुआ तो प्रकट रूप में ही मैं कीचक का वध करूँगा । वहाँ से सीधे जाकर दुर्योधन को मार डालूंगा । चाहे तो युधिष्ठिर राजा विराट के दरबार में उसका मनोरंजन करते नौकरी करो ।"

द्रौपदी ने भीम को शांत करते हुए कहा–"तुम कीचक का वध इस तरह करो जिससे हमारे नियमों का उल्लंघन न हो ।"

"अच्छी बात है, आज रात को अंधेरे में ही मैं इस तरह उसका वध करूँगा, जिससे उसे पता तक न चले कि मैं कौन हूँ ।" भीम ने समझाया ।

उस दिन रात को घने अंधेरे में भीम नर्तनशाला में पहुँचा और वह कीचक का इस प्रकार इंतज़ार करने लगा जैसे हिरण के वास्ते सिंह इंतजार करता है ।

शीघ्र ही कीचक अपने को अनेक प्रकार से अलंकृत करके सैरंध्री से मिलने के कुतूहल को लेकर नर्तनशाला में पहुँचा । भीम चारपाई पर लेटा हुआ था । कीचक हाथ से थपथपा कर उसे उठाते हुए बोला–"मैंने अपने अंत:पुर को खूब सजा कर रखा है । सैकड़ों दास और दासियों को नियुक्त किया है, साथ ही तुम्हारे लिए अपार धन तैयार रखा है । मेरे अंत:पुर की स्त्रियाँ कहती हैं कि मेरे जैसे सुंदर पुरुष सारे संसार में नहीं हैं । ऐसे व्यक्ति मैं तुम्हारे वास्ते इस अंधेरे में अकेले आया हूँ ।"

इस पर भीम ने कहा–"तुम सचमुच सुंदर हो, मगर ऐसे स्पर्श का अनुभव तुमने

आज तक न किया होगा।" इन शब्दों के साथ भीम चारपाई से उठ खड़ा हुआ और उसके केश पकड़ पर खींचते हुए बोला.. "मैं तुम्हें इस तरह मार डालूंगा जैसे सिंह हाथी को मारता है। आज से सैरंध्री को तुम्हारा पिंड़ छूटेगा।"

कीचक ने झटका देकर अपने केशों को छुड़ाया और भीम से जूझ पड़ा। विजय पाने की इच्छा से परस्पर दोनों लड़ते, हाथों, नाखूनों तथा दांतों से एक दूसरे को मारने व काटने लगे। कीचक ने अपनी सारी शक्ति लगाकर मुक्के मारे, फिर भी भीम हिले बिना अपनी जगह खड़ा रहा। उनके द्वन्द्व युद्ध से नर्तनशाला काँप उठी।

लड़ाई के बीच भीम ने कीचक को सारी ताक़त लगाकर लात मारी और उसे नीचे गिराया। कीचक के उठते न देख भीम ने उसकी छाती पर ज़ोर का प्रहार किया। इसके बाद कीचक को उठाकर चारों तरफ़ घुमाया। उसका गला दबाया, उसकी छाती पर बैठकर घुटनों से मार मार कर इस तरह मार डाला जैसे जानवर को मारा जाता है। कीचक के मरने के बाद भी भीम ने उसे नहीं छोड़ा, उसके हाथ, पैर तथा सर को धड़ में घुसेड़ दिया और उसके शव को माँस का ढेर ही बना दिया।

अंत में भीम ने लाश पर एक लात मारी, तब आग जलाकर उसकी रोशनी में शव को द्रौपदी को दिखाया और कहा– "जो भी तुम्हारे ऊपर अनुरक्त होगा, उसका यही हाल होगा।" तब भीम रसोई घर की ओर चला गया। इसके बाद द्रौपदी ने नर्तनशाला के सेवकों को जगाकर कहा–"जाकर तुम लोग देख लो। कीचक को गंधर्वों ने मार डाला है।" वे लोग घबराये हुए मशाल जलाकर नर्तनशाला में पहुँचे। कीचक की लाश को देख वे इस बात का पता न लगा सके कि उसके हाथ, पैर और कंठ कहाँ हैं?
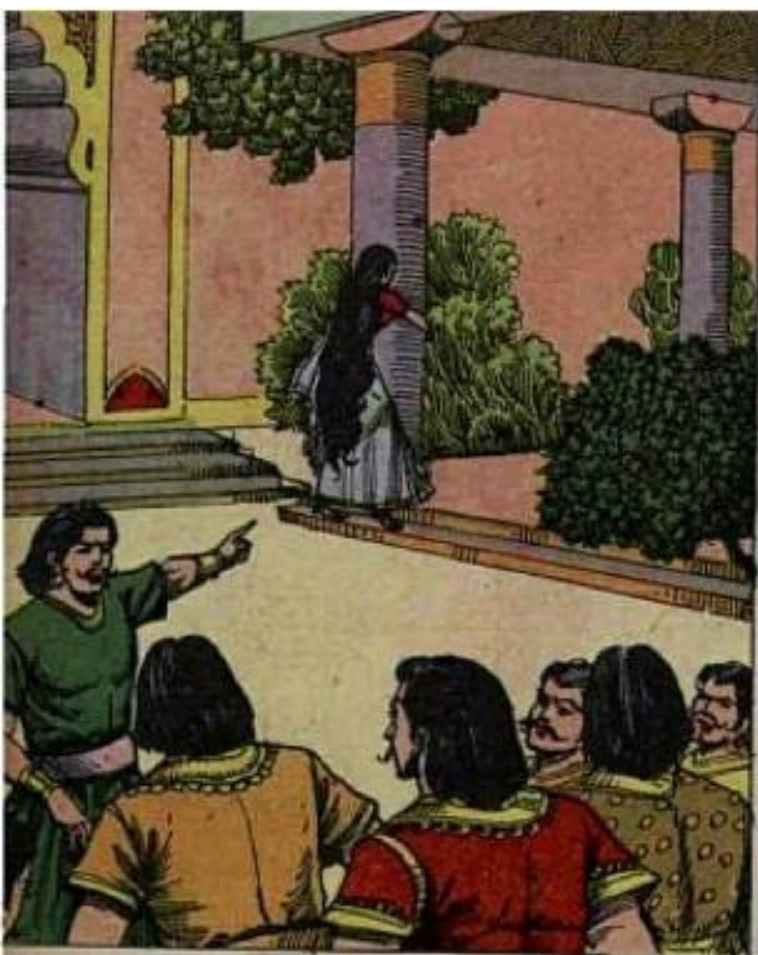
वहाँ पर रहनेवाले कीचक के रिश्तेदार शव के चारों ओर इकट्ठे हुए और रोने लगे। कछुए की तरह बने कीचक के शव को देख उनके शरीर काँप उठे। शव का दहन-संस्कार करने के लिए उपकीचक प्रयत्न में लगे हुए थे, तभी पास के एक खंभे से लगी सैरंध्री उन्हें दिखाई दी।

"इसी के वास्ते हमारे भाई की मृत्यु हो गयी है। भाई के शव के साथ इसे भी जला दे, तो उनकी आत्मा को शांति मिलेगी।" यह सोचकर उप कीचकों ने विराट के पास जाकर कीचक के साथ सैरंध्री को जलाने की अनुमति माँगी।

विराट इनकार करने की हिम्मत नहीं रखता था, इसलिए उसने स्वीकृति दे दी।

उप कीचकों ने द्रौपदी को कीचक के शव के साथ बाँध दिया और उसे श्मशान में ले गये। रास्ते में द्रौपदी अपने पतियों के गुप्त नाम ले-लेकर चिल्लाने लगी–"जय, जयंत, बिजय, जयत्सेन तथा जयद्बल! ये कीचक मुझे पकड़कर ले जा रहे हैं।"

भीम उसी समय लेटकर सोने का उपक्रम कर रहा था, उसने द्रौपदी की चिल्लाहटें सुनकर कहा–"सैरंध्री, डरो मत! मैं तुम्हें छुड़ाने आ रहा हूँ।" इसके बाद वेश बदल कर दीवार लांघ करके भीम श्मशान की ओर दौड़ पड़ा।

श्मशान में चिता तैयार की गयी थी। भीम ने श्मशान के पास के एक पेड़ को जड़ सहित उखाड़ डाला और उप कीचकों के सामने आया।

उसे देखते ही उप कीचक डर के मारे चिल्ला उठे–"बाप रे बाप! यह तो गंधर्व है!" तब द्रौपदी को वहीं छोड़ वे सब नगर की ओर भाग खड़े हुए। भीम ने उन एक सौ पाँच आदमियों को मार डाला, द्रौपदी के बंधन खोलकर कहा–"तुम बेफिक्र अंत:पुर में चली जाओ, मैं रसोई घर में जाता हूँ।"

उप कीचकों के शवों के ढेर को तथा अंतःपुर में जानेवाली सैरंध्री को भी देख नगर के लोग भयभीत हो उठे और राजा विराट के पास जाकर बोले–"महाराज, सारे कीचक मारे गये हैं। गंधर्वों ने उन्हें मारकर सैरंध्री को मुक्त किया है। वह लौटकर यहीं आ रही है। वह बड़ी सुंदर है। उसे देखने पर सब के मन में मोह पैदा हो जाता है। उस पर जो भी आसक्त होगा, उसकी यही हालत होगी। इस तरह हमारे नगर का ही सर्वनाश होगा। ऐसा कोई उपाय सोचिये, जिससे सैरंध्री के कारण हमारी कोई हानि न हो।"

राजा विराट ने सभी कीचकों का एक ही चिता में दहन-संस्कार करने का आदेश दिया और रानी सुधेष्णा के पास जाकर बोला–"सैरंध्री के यहाँ आते ही उसे मीठी बातों के साथ समझाकर यहाँ से भेज दो। तुम उससे कह दो कि मैं उसकी वजह से यह सोचकर डरता हूँ कि गंधर्वों के द्वारा हमारी न मालूम कब कैसी हानि होगी! यह भी कहो कि मैं सीधे उससे कहने की हिम्मत नहीं रखता, इसलिए तुम्हारे द्वारा कहलवा रहा हूँ।"

द्रौपदी सचेल स्नान करके नगर में लौट रही थी, उसे देख गंधर्वों के डर से लोग भाग खड़े हुए।

इसके बाद द्रौपदी आगे बढ़ी, नर्तनशाला के पास राजकुमारियों को नृत्य सिखाने वाले अर्जुन को उसने देखा। उसे देखते
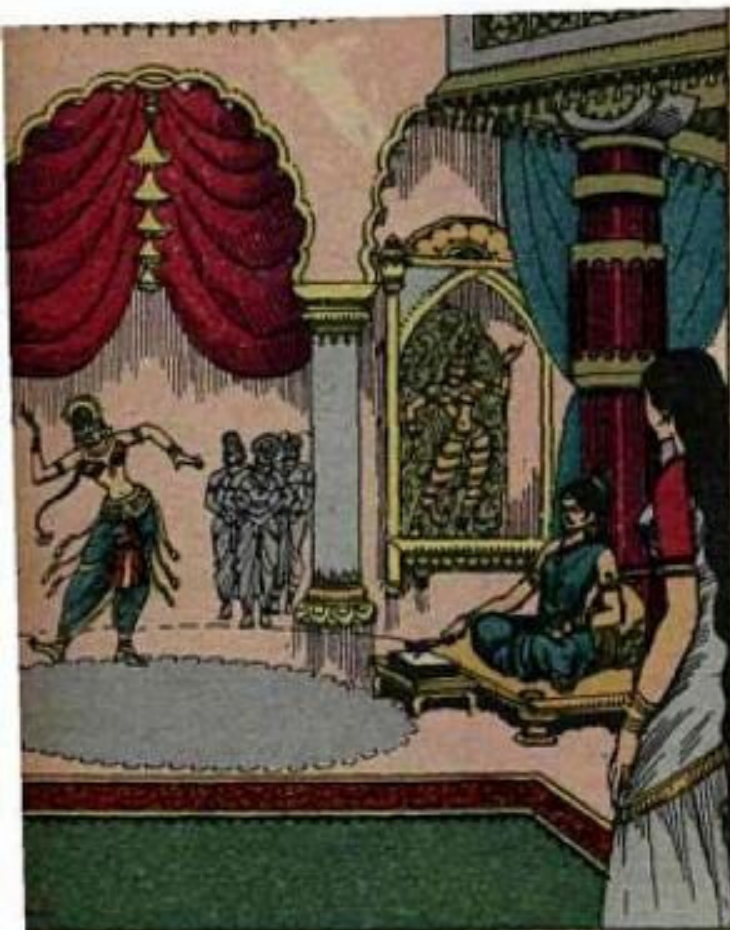
हो नर्तनशाला से अर्जुन और राजकुमारियाँ उसके निकट आयीं। एक बहुत ही बड़े खतरे से मुक्त होने के कारण उसका अभिनंदन किया।

अर्जुन ने द्रौपदी से पूछा—"द्रौपदी, तुम उस खतरे से कैसे बच गयी? वे दुष्ट कैसे मरे? बताओ न?"

"बृहन्नला, तुम यह बात पूछते ही क्यों? तुम क्या किसी प्रकार से मेरी मदद कर सकते थे? तुम आराम से अंतःपुर में बैठे रहे, अब सैरंध्री का हाल हँसते हँसते पूछने आये हो?" द्रौपदी ने ताने कसे।

"तुम्हारे साथ इतने दिनों तक स्नेह से रहनेवाले मुझे तुम्हारे बारे में दुख क्यों न होगा? एक का मन दूसरा क्या जाने?" अर्जुन ने जवाब दिया।

इसके बाद द्रौपदी राजकुमारियों के साथ जब अंतःपुर में पहुँची, तब रानी सुधेष्णा ने यों कहा—"सैरंध्री, तुम्हें तथा तुम्हारे गंधर्वों से राजा बहुत ही डर रहे हैं। इसलिए तुम कहीं और चली जाओ। तुम्हारे सौंदर्य को देखने पर हर पुरुष पागल हो जाता है, गंधर्व तो बड़े ही क्रोधी मालूम होते हैं।"

"महारानीजी, अगर महाराज मुझे और तेरह दिन तक क्षमा कर सकें तो गंधर्व आकर मुझे ले जायेंगे। इसके बाद राजा, उनके मित्र और रिश्तेदार सुखपूर्वक रह सकते हैं।" द्रौपदी ने समझाया।

विराट नगर की जनता को जब मालूम हुआ कि महाबली कीचक तथा उसके भाइयों की मौत हो गयी है, तब वे सब बड़े ही दुखी हुए। सभी देशों में यह खबर फैल गयी कि किसी औरत को लेकर गंधर्वों ने कीचक का वध कर डाला है।

उन्हीं दिनों में दुर्योधन के गुप्चर कई देशों, पहाड़ों, गाँवों तथा तीर्थस्थानों में पांडवों को न पाकर निराश हो हस्तिनापुर को लौट आये। उन लोगों ने सोचा कि

शायद पांडव मर चुके होंगे। कीचक के वध का भी ममाचार मुनाकर गुप्तचरों ने यही कहा कि उन गंधर्वों का पता नहीं चला है।

दुर्योधन ने अपने सभासदों मे कहा– "मेरी समझ में नहीं आता कि अब पांडवों का पता कैसे लगाया जाय! आप लोग भी इम बात पेर गंभीरता पूर्वक विचार कीजिये। पांडवों के आज्ञातवास के समाप्त होन में थोड़े ही दिन शेष है। अवधि के पूरा होने के पहले यदि हम उनका पता लगा ले तो वचन के पक्के पाँडव लोग फिर से बारह माल का वनवाम करेंगे!"

कर्ण और दुश्शासन ने दुर्योधन को मलाह दी कि फिर मे गुप्तचरों को पांडवो का पता लगाने भेजा जाय। द्रोण ने भी यही कहा कि पांडव अवश्य जीविव होंगे। इस लिए ऐंमे गुप्तचरों को इस बार भेजे जायें जो पाँडवों की जानकारी रखते हो! भीष्म ने भी पाँडवो के जीविन रहने पर विश्वाम प्रकट करते हुए मुझाया– "युधिष्ठिर जिस देश में रहेंगे, वह देश संपन्न होगा। वहां की जनता तृप्ति के माथ दिन बिताती होगी और धर्मपरायण होगी। उस देश में समय पर वर्षा होती होगी। इमलिए ऐसे देश की खोज करायी जाय।"

इस पर कृपाचार्य न दुर्योधन मे कहा– "भीष्म का कहना मच है! एक ओर पांडवों की खोज कराते हुए दूसरी ओर हमें एक खाम काम करना है। यदि पांडव अज्ञानवाम समाप्त करते है तो वे अपने राज्य के वास्ते जरूर युद्ध करेंगे। इसलिए हमे अपने बल, धन और राजनीति को बढ़ाना होगा! साम, दाम भेद व दण्डोपायो द्वारा हमे बलवान तथा दुर्बल राजाओ को भी अपन पक्ष मे करना होगा! अपने कोश को भरना होगा। ऐमा कर सके तो हम पांडवो के पक्ष में लड़नेवाले राजाओ को युद्ध में हराकर मुखी हो सकते है।"

शिवपुराण

[१७]

ब्रह्मा के द्वारा वर प्राप्त करके शंखचूड उनके आदेशानुसार बदरिकाश्रम में आया और वहाँ तपस्या करनेवाली तुलसी नामक एक कन्या को देखा। उसके दिव्य सौंदर्य को देखते ही शंखचूड के मन में उस कन्या के प्रति मोह पैदा हुआ।

शंखचूड ने उस कन्या के पास जाकर पूछा–"सुंदरी, तुम कौन हो? किसकी पुत्री हो? इस वन में क्यों रहती हो?"

तुलसी भी शंखचूड के सौंदर्य पर मुग्ध हो उठी। उसने जवाब दिया–"मैं धर्मध्वज नामक राजा की पुत्री हूँ। मेरा नाम तुलसी है। मैं इस विचार से तपस्या कर रही हूँ कि एक महान वीर मेरे पति बने और एक महा पतिव्रता के रूप में यश प्राप्त करूँ। लेकिन आप कौन हैं?"

मैं दंभु नामक दानव राजा का पुत्र हूँ। मेरा नाम शंखचूड है। मैं ब्रह्मा के प्रति तपस्या करके तीनों लोकों पर अधिकार प्राप्त करने का वर पाया हूँ। ब्रह्मा ने ही तुम्हारे साथ विवाह करने का मुझे आदेश दिया है। इसलिए हम पति-पत्नी बनकर आराम से रह सकते हैं।"

इसके बाद दोनों ने गांधर्व विधि से विवाह किया, समीप के पहाड़ों, नदियों तथा वनों में विहार किया। फिर शंखचूड के घर जाकर सारा वृत्तांत दंभु, उसकी पत्नी तथा शुक्राचार्य को कह सुनाया। वे सब बहुत ही आनंदित हुये। इसके उपरांत दंभु ने शुक्राचार्य की अनुमति लेकर शंखचूड का राज्याभिषेक किया। शंखचूड ने शुक्राचार्य की सलाह लेने

अंतिम पृष्ठ का चित्र

63

अपने राज्य पर अच्छे ढंग से शासन किया और अपने पिता से भी अधिक यश प्राप्त किया। एक दिन दानव वंश के प्रमुख व्यक्तियों तथा शुक्राचार्य ने शंखचूड़ के पास जाकर कहा–"राजन, ब्रह्मा ने तुम्हें अनेक वर दिये हैं। तुम्हारे पूर्वजों के प्रति इंद्र आदि देवताओं ने अनेक अपकार किये हैं। उनसे प्रतीकार लेने की जिम्मेदारी तुम पर है। इसलिए तुम पहले अपनी सेनाओं को लेकर स्वर्ग पर आक्रमण करके देवताओं को भगा कर उस पर अधिकार कर लो।"

शंखचूड ने शुक्रचार्य से निवेदन किया कि आक्रमण करने के लिए एक शुभ मुहूर्त का निर्णय करें। तदनंदर उस मुहूर्त में अपनी सेनाओं के साथ जाकर शंखचूड ने स्वर्ग पर हमला कर दिया।

गुप्तचरों के द्वारा इंद्र ने पहले ही जान लिया कि शंखचूड़ स्वर्ग पर आक्रमण करने जा रहा है। इसलिए इंद्र ने कुमारस्वामी तथा देवगणों को बुलाकर युद्ध की तैयारियाँ प्रारंभ कर दीं।

देवगणों तथा दानव गणों के बीच चालीस दिन तक रात-दिन भयंकर युद्ध हुआ। उस युद्ध में ऐसा प्रतीत हुआ कि देवताओं के पैर उखड़ते जा रहे हैं, पर दानवों का उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। इस कारण देवता भागने लगे।

अपनी सेनाओं को भागते देख इंद्र ने सोचा कि उसकी पराजय निश्चित है। इसलिए उसने ब्रह्मा के द्वारा शंखचूड़ को दिये गये वरों का स्मरण किया। तब देवगणों को युद्ध-भूमि से हटाकर वह शंखचूड़ के पास गया और बोला–"तुम महर्षि कश्यप के वंश में उत्पन्न हुए हो! मैं तुम्हारे शौर्य और पराक्रम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ। तुम्हीं इन तीनों लोकों पर शासन करो। हम सब तुम्हारी सहायता करेंगे।"

इस पर शंखचूड़ ने उत्तर दिया–"इंद्र, तुम्हीं मेरे प्रतिनिधि बन कर, मेरे आदेशों

का पालन करते हुए स्वर्ग पर शासन करो।" इसके बाद शंखचूड़ ने यह घोषणा की कि वह तीनों लोकों का अधिपति है। तब वह अपनी राजधानी शोणितपुर को लौट आया, वहीं से वह तीनों लोकों पर शासन करने लगा। इन्द्र आदि रोज उसकी सेवा करते उसकी आज्ञाओं का पालन करने लगे।

लेकिन यज्ञ-याग इत्यादि करनेवाले हविष को इंद्र आदि देवताओं को ही समर्पित करते थे। इस पर शंखचूड ने अपने दानव गणों को आदेश दिया कि ब्राह्मण और ऋषि जब तक यज्ञ के हविष को दानवों को नहीं सौंपेंगे तब तक उन्हें सताते रहो। तब दानव गण यज्ञ-याग का ध्वंस करने लगे। इससे परेशान हो सभी ऋषियों ने विष्णु के पास जाकर बिनती की– "भगवन, शंखचूड की यातनाओं से हम लोग परेशान हैं; अतः आप उसका वध करके हमारी रक्षा करें।"

"शंखचूड का जन्म मेरे अंश में हुआ है। तुलसी लक्ष्मी के अंश में पैदा हुई है। इसलिए मैं शंखचूड का वध नहीं करूँगा। तुम लोग शिवजी की शरण में जाओ।" विष्णु ने ऋषियों को सलाह दी।

इस पर सब ऋषि कैलास में गये और शिवजी से प्रार्थना की कि शंखचूड की
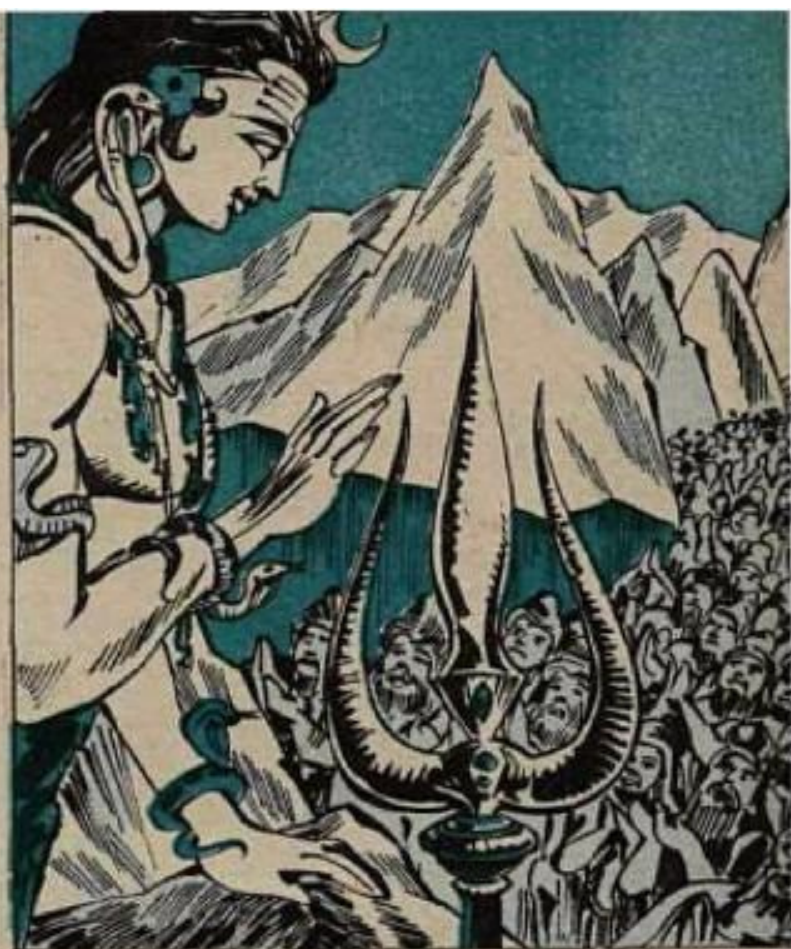
यातनाओं से उनकी रक्षा करें। शिवजी ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वे शंखचूड इत्यादि दानवों का वध करेंगे। तब उन सबको भेज दिया।

यह समाचार मिलते ही नारद शंखचूड के पास गया और बोला–"शंखचूड, शिवजी ने ऋषियों को यह आश्वासन दिया है कि वे तुम को मार डालेंगे। अचानक रुद्रगणों के साथ शिवजी के हमला करने के पहले ही तुम कैलास पर हमला करके शिवजी को पराजित करो।"

शंखचूड ने नारद की सलाह के अनुसार अपनी सेना लेकर कैलास पर आक्रमण कर दिया। इसे देख शिवजी ने शंखचूड से

लड़ने के लिए नंदी के द्वारा भद्रकाली, भद्रगण तथा कुमार गणों को बुला भेजा। सब आ पहुँचे, तब रुद्रगणों तथा दानव सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया।

कई दिनों तक युद्ध चलता रहा, मगर शंखचूड की सेनाओं के घटते न देख शिवजी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने विष्णु का ध्यान करके उन्हें बुला भेजा और पूछा-"अनेक दिनों से युद्ध चल रहा है, फिर भी शंखचूड की सेनाएँ घट नहीं रही हैं, क्या बात है?"

इस पर विष्णु ने समझाया-"शंखचूड की पत्नी तुलसी का पातिव्रत्य शंखचूड और उसकी सेनाओं की रक्षा कर रहा है। मैं तुलसी के पतिव्रत्य को नष्ट कर देता हूँ, तब तुम शंखचूड का वध करो।"

इसके बाद विष्णु शंखचूड का रूप धारण करके उसके घर गया और तुलसी से कहा-"मैं शिवजी के साथ युद्ध कर रहा हूँ। अभी तक किसी की भी विजय नहीं हुई। तुम्हें देखे बहुत दिन हो गये हैं, इसलिए तुम्हारे पास चला आया हूँ।" तुलसी ने विष्णु की उन बातों पर विश्वास किया, वह बड़ी प्रसन्नता के साथ माया वेषधारी विष्णु को अपने पति मानकर उसके साथ अपने दिन बिताये। इस प्रकार उसका पातिव्रत्य नष्ट हो गया।

तुरंत ही शंखचूड की सेनाएँ नष्ट होने लगीं। तब शिवजी ने शंखचूड का अपने त्रिशूल के साथ वध किया।

उस रात को विष्णु को अपनी बगल में सोते वक़्त तुलसी ने उसके असली रूप को देखा। क्योंकि निद्रा के समय माया रूप गायब हो जाते हैं। माया रूप में विष्णु ने उसके साथ धोखा दिया था, इसलिए उसने विष्णु को शाप दिया कि वह पत्थर बन जाय!

"तुम गण्डकी नदी बनोगी, मैं साल ग्राम के रूप में उस नदी में शाश्वत रूप से रह जाऊँगा। तुम्हारे नाम पर तुलसी का पौधा सर्वत्र पूजा जायगा।" ये शब्द कहकर विष्णु तुलसी को गोलोक में ले गये।

बुराई का फल बुरा

एक गाँव में एक गरीब बूढ़ा था। उसके रामनिवास और कृष्णदास नामक दो बेटे थे। उनकी जायदाद थी–घर बनाने की थोड़ी सी जमीन, कुछ मुर्गियाँ और एक कुत्ता।

बूढ़े ने मरते वक़्त अपने पुत्रों को बुला कर कहा–"बेटे, मेरे बाद तुम दोनों झगड़ा-फसाद किये विना जायदाद बाँटकर आराम से जिओ, एक दूसरे को धोखा न दो।" दोनों भाइयों ने अपने बाप को आश्वासन दिया कि झगड़ा किये बिना वे जायदाद बांट लेंगे।

अपने बाप के मरने के बाद भाइयों ने घर बनाने वाली जमीन बाँट ली और उसमें अलग-अलग झोंपड़ियाँ बना लीं।

बड़े भाई रामनिवास के मन में यह कुविचार आया कि सारी मुर्गियाँ वही हड़प ले, क्योंकि कुत्ते को पालना बेकार का काम है, मुर्गियों को ले तो उनके अण्डों को बेचकर काफ़ी धन इकट्ठा किया जा सकता है और आराम से उसका गुजारा भी हो सकता है।

इस विचार के आते ही रामनिवास ने अपने छोटे भाई कृष्णदास को बुलाकर पूछा–"भाई, पिता ने हमें बताया है कि झगड़ा-फसाद किये बिना ही जायदाद बाँट ले। इसलिए तुम मुझे मुर्गियाँ दे दो और क़ीमती कुत्ते को तुम ले लो। उसकी मदद से तुम बहुत-कुछ कमा सकते हो! तुम्हारा क्या विचार है?"

भोले कृष्णदास ने बड़ी खुशी से अपने भाई की सलाह को मान लिया और उसने अपने हिस्से में कुत्ता ले लिया। दूसरे दिन से रामनिवास मुर्गियों को पालते अण्ड़ों को बेचकर आराम से दिन काटने लगा।

कृष्णदास के सामने जल्द ही यह समस्या पैदा हो गयी कि वह कैसे जिये? उसके खाने का इंतज़ाम करना है और साथ ही कुत्ते को भी खिलाना है। इसलिए एक दिन वह कुत्ते को लेकर जंगल में शिकार खेलने गया। कुत्ते की मदद से उसने एक हिरण को मारा, उसे ले जाकर शहर में अच्छे दाम पर बेचा और अपने खाने के लिए आवश्यक सारी चीज़ें खरीद लाया।

हर रोज कृष्णदास जंगल में जाता, किसी न किसी जानवर का शिकार करके शहर में बेच डालता। इस तरह उसने काफी धन कमाया। इसे देख रामनिवास को कृष्णदास और उसके कुत्ते पर ईर्ष्या पैदा हुई। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि किसी न किसी उपाय से कुत्ते को मार डालना चाहिये।

एक दिन शाम को कृष्णदास कहीं बाहर चला गया था। मौक़ा पाकर रामनिवास ने चावल में ज़हर मिलाया और उसे कुत्ते के सामने रख कर अपने घर चला गया।

कुत्ते ने ज़हर मिला खाना खा लिया, वह अपने पैर घसीटते रामनिवास के घर के पिछवाड़े में गया और वहाँ पर कै किया। फिर वह कृष्णदास के घर पहुँचकर लेट गया।

इसके थोड़ी देर बाद रामनिवास की मुर्गियाँ उधर आ पहुँचीं, कै किया हुआ वह खाना खा लिया। शाम के होते ही रामनिवास ने अपनी सारी मुर्गियों को उनके अड्डे पर पहुँचा दिया।

दूसरे दिन सवेरे नींद से जागते ही रामनिवास ने सोचा कि कृष्णदास का कुत्ता मर गया होगा। लेकिन उसी वक़्त उसने देखा कि कृष्णदास अपने कुत्ते को साथ ले शिकार खेलने जा रहा है।

रामनिवास को इस बात का आश्चर्य हुआ कि कृष्णदास का कुत्ता ज़हर खा कर भी ज़िंदा है। तब वह अपनी मुर्गियाँ को बाहर छोड़ने के लिए पहुँचा तो देखता क्या है, सारी मुर्गियाँ मरी पड़ी हैं।

१२७. विश्व की नाभि

इस चित्र के निचले भाग में स्थित वृत्तों में बीच वाले वृत्त को चीन के सम्राट "स्वर्गवेदी" पुकारा करते थे और वहां पर प्रार्थना करके हविष छोड़ते थे। उनकी दृष्टि में यह विश्व का नाभि प्रदेश है। इस वृत्त की वेदियों के ऊपर का भाग राज महल का प्रांगण है।

Photo by Prabhakar Mahadik
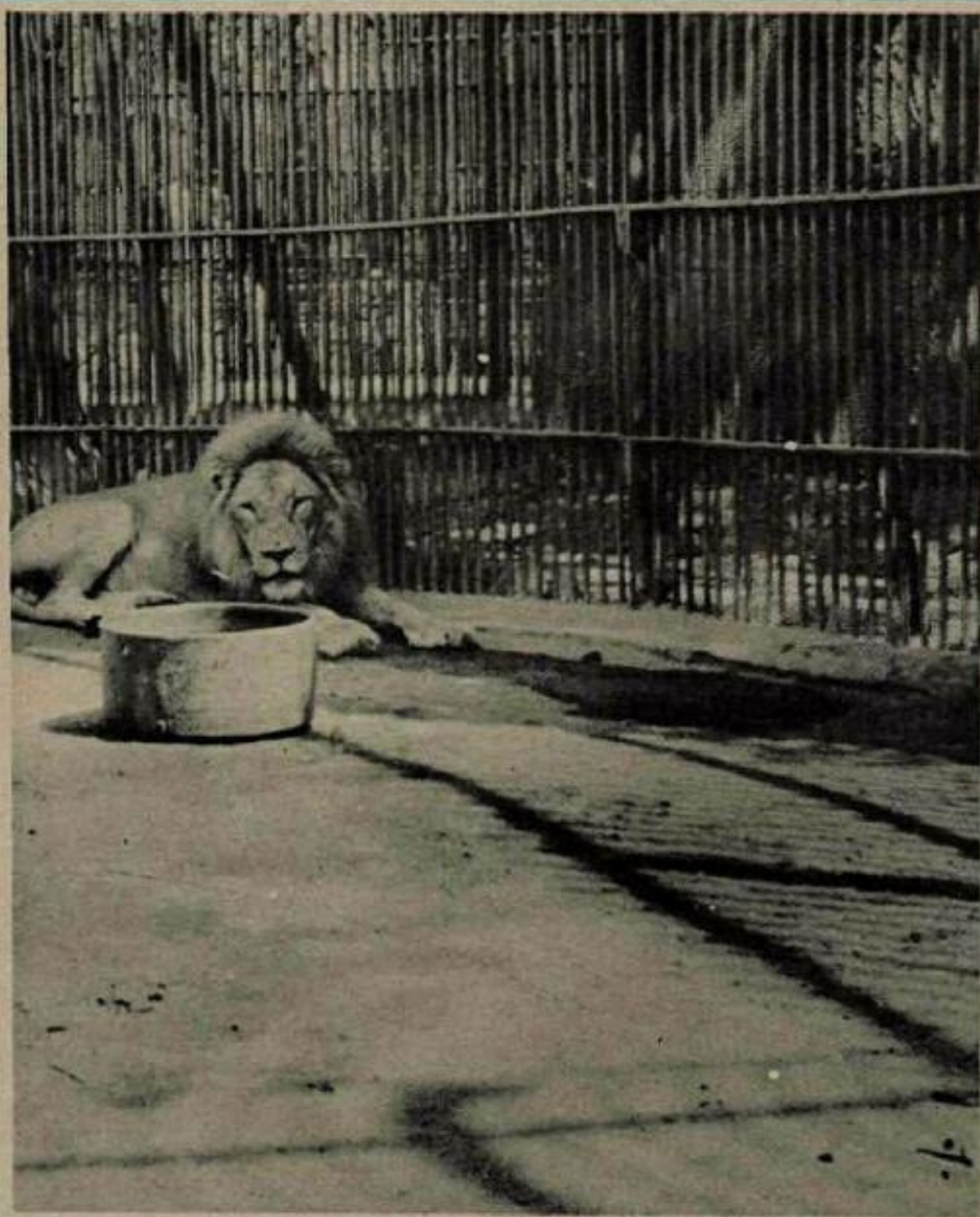
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

मुझको है किसी भक्ष्य की प्यास

प्रेषक :
नंदकुमार रामसिंग परदेशी

Photo by Prabhakar Mahadik
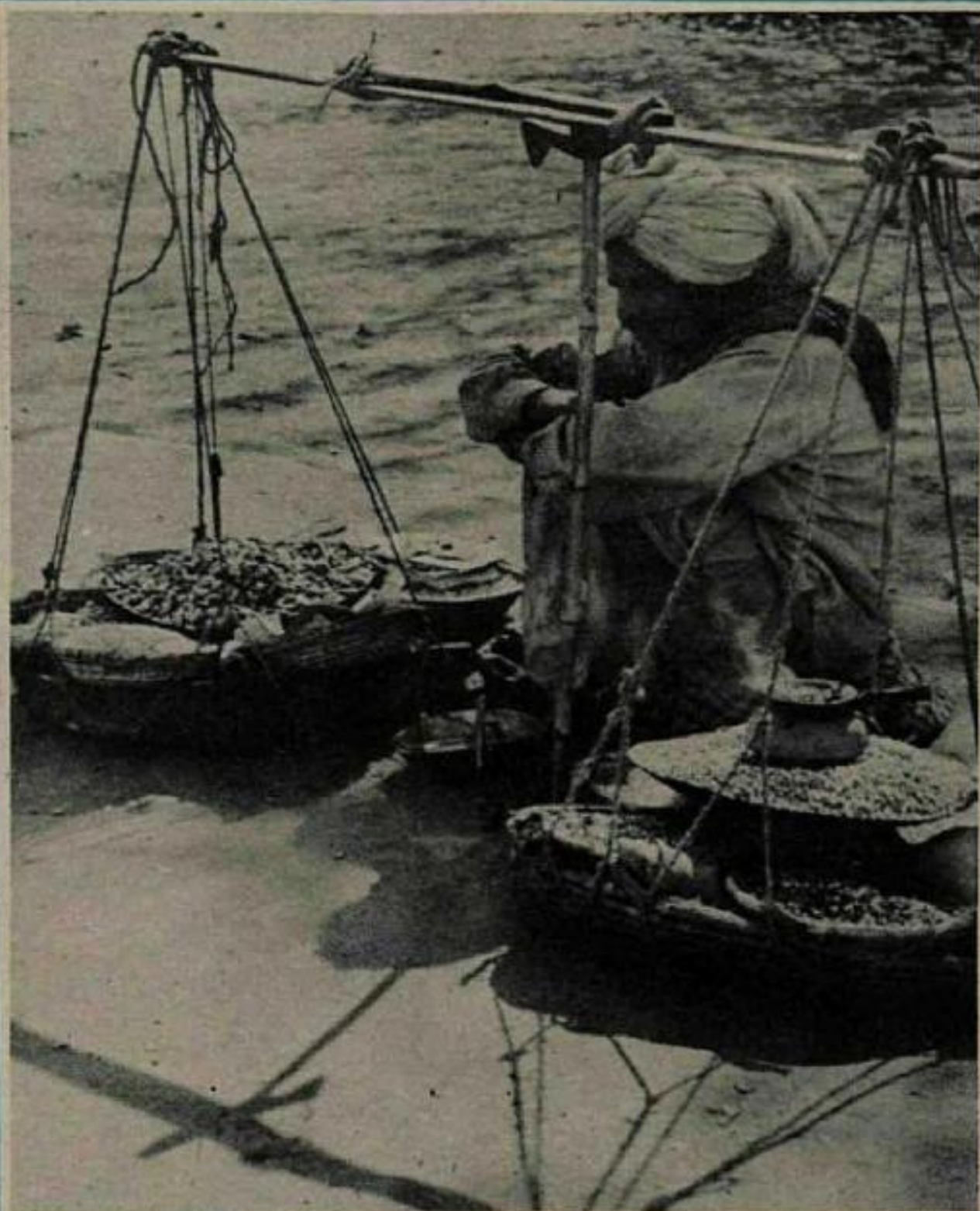
२७, विरय्या चिप्पा
कॉलोनी, शोलापुर-१

मुझे तो है ग्राहक की आस

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ अगस्त ५ तक प्राप्त होनी चाहिए ।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ:
मगरमच्छ के अण्डे

तीसरा मुखपृष्ठ
मगरमच्छ के बच्चे

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

अपनी रक्षा आप...

डैडी, सुनील ने आज सवेरे मुझे मारा

तुमने उसको क्यों नहीं मारा? अपनी रक्षा आप करना सीखो!

देखो, घूंसे से बचने के लिए या तो पीछे या बाजू हट जाओ या ऐसे झुक जाओ कि वार खाली जाय।

घूंसे को कलाई पर भी रोक सकते हो।

या अपनी भुजा या कन्धे पर भी झेल सकते हो।

हाँ ऐसे! 'बॉक्सिंग' यानी अपनी रक्षा आप करने का यह तुम्हारा पहला सबक है।

बाप रे, बड़ी देर हो गयी। चलो सो जाएँ। रोहित, तुमने दाँत तो साफ कर लिए हैं न?

डैडी, मैं रोज़ सवेरे तो करता हूँ।

रेखागणित को आसान व भूगोल को रंगीन बनाइये...

पिथागोरस को मात दीजिये। रेखाचित्रों को रंगीन बनाइये...कैम्लिन इन्स्ट्रुमेंट बाक्स व रंगीन पेंसिल लीजिये। जब कि एक काम में अचूक व दिखने में आकर्षक है तो दूसरी मुलायम लेड वाली और चलने में सरल है। पर दोनों टिकाऊ, कम घिसने वाली और किफ़ायती हैं।

कैम्लिन आपके लिए वैक्स क्रेयान, वाटर कलर, पोस्टर कलर आदि विविध प्रकार की आर्ट सामग्रियां बनाते हैं। आपके नजदीक के विक्रेता के यहां मिलते हैं।

कैम्लिन

कलर पेंसिल्स व
इन्स्ट्रुमेंट बाक्स ख़रीदिये

कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड,
आर्ट मेटीरियल डिविजन, जे. बी. नगर,
बम्बई-५९ (भारत)

PRATIBHA 1813-39 HIN

चिकलेट्स मज़ेदार चूइंग गम
Chiclets
LEMON
ORANGE
12 PIECES
बच्चों देखो नया कमाल
चिकलेट के
जोकर की चाल
मज़ा अनेक
नाचो, गाओ, मचाओ शोर
मुझको और, मुझको और!"
लेमन
ऑरेंज
पेपरमिंट
टूटी-फ्रूटी

Photo by: SURAJ N. SHARMA